
भगवान
गरुड़

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीनारायणजोहैं तिनेंनमस्कार करके नरजोहैं फिर कैसेहैं नरोंमें उत्तमहैं देवीजीको और सरस्व
तीजीको तैसेही व्यासजीको नमस्कार करके जयशब्दउचारणकरे १ सूतजी सौनकादि ऋषीश्वरों से कहते हैं।
कि गंगाजीके किनारे सें बैठेहैं सुखसे स्नान करके अलंकारकिये ब्राह्मणोंको दानदेकर राजा जनमेजय
वैशंपायन से पूछतेभए। हे वैशंपायनजी महाप्राज्ञ सब शास्त्रके जाननेवाले दिव्यजो कथाहै सबपा

श्रीगणेशायनमः नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमं देवींसरस्वतींव्यासं ततोजयमुदीरये
न् १ सूतउवाच॥ गंगातीरेसुखासीनः कृतस्नानोह्यलंकृतः दानंदत्वाचविधिवद्द्विजेभ्योज
नमेजयः २ जनमेजयउवाच। पृच्छामित्वेमहाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद कथयस्वकथांदि
व्यां सर्वपापप्रणाशिनीं यांश्रुत्वासर्वपापेभ्यो मुच्यतेनात्रसंशयः ३ वैशंपायनउवाच।
श्रूयतांराजशार्दूल कथापौराणिकीशुभा शृण्वंतु मुनयःसर्वे येचान्येतपसिस्थिताः॥ ४॥
कश्चिदासीत्पुराराजन्नृषिपरमधार्मिकः उदालकेतिविख्यातो ब्रह्मपुत्रस्तुतापसः॥५॥

पोंके नाशकर्नेवाली कहोजिसके सुननेसे मनुष्य सब पापोंसे छूटजाय निस्संदेह ३ वैशंपायनजी बोले हे रा
जन् राजाओंमें श्रेष्ठसिंहसमान पुराणसंबंधी जोकथाहै तिसकोसुनऔर जोतपस्यामे स्थितऋषि वेभी सब सु
नो मैंकहताहूं ४ हे राजन्पुराकहिये पहिले कोईऋषि परम धर्मवाला उद्दालकहै नामजिसका विख्यातकहैं प्रसि
द्ध ब्रह्माकापुत्रऔर बड़ीतपस्या करनेवाला होताभया॥ ५ ॥ फिर कैसाहै उद्दालक नामा ऋषि ॥

वेदऔरवेदांगके तत्त्वके जानने वाला फिर कैसा मनुजासे आदिले स्मृतियें और सिद्धांतग्रंथोंको जानने वाला -
होताभया ६ जिसका आश्रम कहैं स्थान बड़ा सुंदर और ऋषियें मुनीश्वरों करके भराहुवा अनेक तरहके
वृक्षलगेहुवे और लता वेल पुष्पों करके शोभामान सुगंधित होताभया ७ फिर कैसा आश्रमहै हंसकारंड चक
कवा चकवी इनकरके शोभितहै और अनेक पक्षी बोलरहेहैं और भैंसे नीलगाय हिरणों करके सेव्यमानफिरतेहैं ८

वेदवेदांगतत्त्वज्ञः स्मृतिसिद्धांतपारगः ६ तस्याश्रमपदंरम्यमृषिभिर्मुनिभिःश्रितं ॥
नानाद्रुमलताकीर्णं नानापुष्पोपशोभितं ७ हंसैःकारंडवैश्चैव चक्रवाकैश्च शोभितं ॥
सेव्यमानंखगानीकैर्महिषैर्गवयैर्मृगैः ८ आगतस्त्वाश्रमेतस्य पिप्पलादोमहामुनिः ॥
तमागतंतयादृष्ट्वा आतिथ्यंचकारसः ९ स्वागतंमुनिशार्दूलविष्टरेचोपविश्यतान् ॥
यदर्थमिहसंप्राप्तस्तद्वदस्वतपोधनः १० उद्दालकवचःश्रुत्वा पिप्पलादस्तमब्रवीत् ॥
श्रूयतांमुनिशार्दूल ममवाक्यंचसत्कृतं ११ अहोतपोमहत्तीव्रं त्वयात्तप्तंविदांवर ॥ १२ ॥

सोउनके आश्रममें एक समय पिप्पलाद नाम महामुनिआवतेभए तिनके आनेसे उद्दालकजी आतिथिसत्कारक
रतेभए ९ चरणधोय आसनपर बैठावतेभए और बोले हेमुनि जिसालिये आयेहो सोकृपाकर्के कहो १० ऐसे उद्दालक
ऋषिके बचनको सुनकर पिप्पलादजी बोलतेभए ११ कि हेउद्दालक मुनियोंमें सिंह मेराबचन सुन कैसा है
सत्यहै कि अहो बड़ा आश्चर्यहै तुमने बड़ातीव्र [illegible]पाकिया हेजानने वालोंमें श्रेष्ठ ॥ १२ ॥ ॥

परंतु तुमभी बिननतया स्त्रीकर्के रहित संयममें उपासित होतेभये ग्रौर तुम्हारेपास जितने ऋषिहैं सब स्त्रीसहित
तपस्या कर्तेहैं ग्रौर सब पुत्रवान् हैं परंतु हे ब्रह्मन् पुत्र हीनतो केवल तुमहीहो १३ देखो पुत्रहीनका
घरभी शून्य है ग्रौर विना पुत्रके परलोकमें गती नहीं होती तिससे संपूर्ण यत्नकर्के चाहिये कि पुत्र उत्प
तिकरनेका उपाय करे १४ सुनके उद्दालकजी बोले हे पिप्पलाद मुनिश्रेष्ठ मुझे छासी ८६ हजार वर्ष हुवे

परंविनतयाहीनं संयमेनह्युपास्थिताः नवपार्श्वेसपत्नीका ऋषयतपासिस्थिताः ॥
सपुत्राः संतिभोब्रह्मन् पुत्रहीनस्त्वमेवच १३अपुत्रस्यगृहंशून्यं परलोगतिर्नहि ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पुत्रमुत्पादयेन्नरः १४ उद्दालकउवाच । षडशीतीसहस्राणि व्य
तीतावत्सराश्चवै पिप्पलादमुनिश्रेष्ठ ब्रह्मचर्ययुतस्यच १५ पिप्पलादउवाच । कायेन
मनसावाचा नारीणां परिवर्जनं ऋतुसेवांबिनात्वस्या ब्रह्मचर्यंतदुच्यते १६ ऋतुकाला
भिगमनं वंशस्यैवतुकारणं नतेयांदोषमस्तीति पुरास्वायंभुवोब्रवीत् ॥ १७ ॥

तपस्यामें युक्तहुवे १५ पिप्पलादबोले काया करके मनकर्के बाणी कर्केस्त्रियोंको त्यागन करे परंतु ऋतुका
लके बिना केवल ऋतुकालमें गमन कर्नेसे ब्रह्मचर्य ग्रपना हीन नहीं होता १६ ऋतुकालमें जो गमन
करना है सो केवल बंश करने हीका कारण समझना चाहिये तिसमें स्त्री संग करने का दोष नहीं है पुरा-
कहिये पहिले स्वायंभुव मनु कहतेभये हैं ॥ १७ ॥

ऐसे पिप्पलाद महामुनी उद्दालकजीको कह कर और नमस्कार करके अपने आश्रम को जातेभए १८ और वैशंपायनजी राजा जनमेजय से कहते हैं हे राजन् उद्दालक ऋषि पिप्पलाद मुनिका पूर्वोक्त वाक्य सुन दुःख करके संतप्त मन जिसका ऐसा विचारने लगा क्यामि कहांजाऊं और कहांसे विवाह के अर्थ कन्या पाऊंगा १९ फेर ऐसा विचारा कि प्रजापति ब्रह्माजी के पास जाऊं सो ब्रह्मा मुझे श्रेष्ठ वंशके धारण करनेवाली शुभ भार्या देंगे क्यों कि पिताको पुत्र का

एवमुक्त्वा ननतस्तं वै पिप्पलादो महामुनिः उद्दालकं नमस्कृत्य समुनिः स्वाश्रमं ययौ १८
वैशंपायन उवाच । उद्दालकस्ततः श्रुत्वा दुःखसंतप्तमानसः क्यामि कन्यकां कस्माल्लभि-
ष्यामीति चिंतयन् १९ पुनरुक्तं तु यास्यामि प्रजापतिनिवेशनं सप्रदास्यति मे भार्यां श्रेष्ठां
वंशधरां शुभां २० प्रास्थितः सचतत्रैव यत्र देवः प्रजापतिः प्रजापतिं ततो दृष्ट्वा प्रणम्य चा
ग्रतः स्थितः २१ तमागतं नरव्याघ्रं परमेष्ठी ब्रवीद्वचः स्वागतं मुनिशार्दूल उद्दालक महा
मुने २२ यदर्थमिह चायातः कारणं तद्वदस्व नः प्रजापतिवचः श्रुत्वा ब्रवीदुद्दालको मुनिः २३

विवाह करना योग्य है २० ऐसा विचार मुनि यात्रा करते भए जहां ब्रह्माजीका स्थानथा उपरांत पहुंचने के ब्रह्माजी का दर्शन कर नमस्कार करके आगे स्थित होतेभए २१ तिन को आया हुआ देख कर कैसे मुनियों में सिंह समान है ब्रह्माजी ऐसे बोलतेभए हे तपोनिधि उद्दालक अपने इहां आवनेका कारण कहो २२ जिसलिये तुम आये हो फिर ब्रह्माजीके वचनको सुनकैके उद्दालक नाम मुनि स्तुति करता जो ब्रह्माजी महाराज हैं तिनसे हाथ जोड़कर कहतेभए

कि हे प्रजापती संतानके लिये मैं आयाहूं और भार्या स्त्रीके अर्थ सो जैसे पुत्र हो मेरे और श्रेष्ठ कुलकी सुंदर बधू हो तैसा तुम करो हे मेरे तात पिता हे प्रभो तुम जगत के रचने वाले हो २४ तब ब्रह्माजी बोले हे मुनि पहले तेरे पुत्र और पीछे तेरे भार्या स्त्री होगी और पुत्र कैसा होगा वंशके बढावने वाला २५ सारे सुलछन कर के पूर्ण रघुकुलकी कंन्या सो तिस करके तेरा पुत्र बढेगा हे पुत्र मैं ब्रह्मा हूं मेरा बचन झूठ नहीं होता २६

संतानार्थमिहायातो भार्यार्थंच प्रजापते यथास्यान्मम पुत्रश्च कुलीनाच शुभा बधूः ॥
तथा त्वं कुरु मे तात स्त्रष्टासि जगतः प्रभो २४ ब्रह्मोवाच। प्रथमं तव पुत्रो वै पश्चाद्भार्या भविष्यति भविष्यति च ते पुत्रो योसौ वंशविवर्द्धनः २५ सर्वलक्षणसंपूर्णा रघुवंशस्य सुंदरी तया वर्द्धिष्यते गोत्रं मम वाक्यं न चान्यथा २६ गच्छ त्वमाश्रमे विप्र उद्दालक महामुने २७
॥ ॥ इति श्री नासिकेतोपाख्याने उद्दालकचिंता नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ वैशंपायन उवाच। उद्दालकस्ततो वाक्यं श्रुत्वाप्यंतरधीयत स्वाश्रमे चागतस्तत्र मनस्येतदचिंतयत् १ भार्यायाः प्रथमं पुत्रः श्रुतो दृष्टो न कस्यच ब्रह्मणानुमृषैवोक्तं परिहास्यं कृतं मम ॥ २

हे विप्र अब तुम अपने आश्रमको गमन करो हे उद्दालक महामुने ॥ २७ ॥ ॥ इति श्री नासिकेत भाषाटीका सुबोधिनी उद्दालक चिंता बर्णनो नाम प्रथमोध्यायः १ ॥ ॥ वैशंपायन कहे हैं हे राजन् उद्दालक ऋषि इतना बचन सुनके अंतर ध्यान होते भये और अपने आश्रममें आनकर ऐसें मनमें चिंता करने लगे १ कि भार्या स्त्री से पहले पुत्रका होना कभी किसी के उत्पत्ति हुवा सुना और न देखा ब्रह्माजी ने मृषा झूठ ही कहा मेरे साथ हांसी करी है किसलिये कि मैंने इस बुढापे में ब्याहकी इच्छा करी है ॥ २ ॥

८ कैसे मेरे पुत्र होगा और कैसे में भार्या स्त्री पाऊंगा ऐसे कामदेव करके व्याकुल है मन जिसका चिंता करता॰
ना॰ भया ३ तब ऐसे स्त्री चिंतामें उद्दालक मुनिका रेत जो वीर्य है स्खलित कहैं निकसता टपकता भया तब ऋ
टी॰ षीने उसवीर्य को कवलपुटडोनाबना बडे जतनसे रखकर ४ और उस कमलको कुशासे लपेट गंगाजी वि
षैं गेरता भया आगे गंगाजीके किनारे ही राजा रघुकी बड़ी सुंदरी पुरीथी ५ तिसपुरीमें बड़ा महल जो विचित्र

कथंममभवेत्पुत्रः कथंभार्यांलभाम्यहं इतिचिंतयतस्तस्य मन्मथाकुलितस्यच॥ ३
उद्दालकस्यचमुने रेतः प्रस्खलितं तदा तद्वीर्यंपद्मपुटके दिव्यंयत्नेनवैततः ४ तंकुशै
र्वेष्टयित्वातु गंगामध्ये विनिक्षिपत् तत्रगंगातटेराज्ञो रघोश्च महतीपुरी॥ ५ तस्या
महतीप्रासादे चित्रिते शिल्पिभिःसिते मेरुशृंगनिभेरम्ये वसतिस्मरघोःसुता ६ त्रिषु
लोकेषुविख्याता नाम्नाचंद्रवतीशुभा कन्यादससहस्रेन सेवितासान्नृपात्मजा ७ उ-
र्वशीमेनकाद्याश्च स्वर्वेश्यारंभिकादयः तस्याःसर्वाःशुभास्ताश्च कलांनार्हंतिषोडशी ८

कियाहुवा और बहुत ऊंचा चूनेंसे लिपाहुवा सुमेरु पर्वतकी शिखर समान तिसमें राजा रघुकी कन्या वसती भई
६ कैसी वह कन्या है तीन लोकमें विख्यात है नाम जिसका चंद्रवती होता भया और दस हजार कंन्यां उस राज पुत्री- ८
की सेवामें रहती भई ७ और फेर कैसी वोह राजकंन्याथी उर्वशी और मेनका और रंभा इनसे आदि लेके जो स्व
र्गकी अपसरा है तिस राजकंन्याके सुंदर रूपकी सोलवीं कलाको भी नंही प्राप्त होतीं भई ॥ ८ ॥

सो राजकन्या दसहजार दासियों करके परिवारित और संपूर्ण अलंकार करके भूषित हुई नित्य गंगा स्नान करके
भोजन करती भई ९ सो एकदिन सखियों के साथ गंगाजी स्नान करने को जाती भई दासियां चवर और ध्वजा
और व्यजन पंखा इत्यादि हाथमें लिये उसराजकन्याके साथ होती भई १० नदी जाय स्नान के लिये जलमें बैठ
ती भई सो वह कन्या देखती क्याहै कि दूरसे एक कवल प्रवाहमें बहता चला आता है ११ और कमलको दोनाकुश

सखीपरीवृतासाच सर्वालंकारभूषिता नित्यं सा स्नाति गंगायां तदाभोज्यं भुनक्ति सा ९॥
गंगायां स्नातुमायाता सखीभिः परिवारिता ध्वजचामरहस्ताभिः सेविता राजकन्यका १०
प्रविष्टा जलमध्ये तु बहुकन्यासमन्विता पश्यति तत्र कन्या सा दूरं गंगोदकोपरि ११॥
पुटकं वेष्टितं दर्भैः तरंतमभिगामिनं आज्ञापयत्कन्यका सा ह्यानयेति सखीं प्रति ॥१२॥
तदाज्ञया तयानीतं पुटकं दर्भवेष्टितं गृहीत्वा राजकन्या सा श्रुत्वा सौगंधिकं च तत् ॥१३॥
छिन्नप्रवाहे गंगाया अद्रवन्या तया पुनः आघ्रात मात्रं तद्वीर्यं प्रविष्टं नाभिमंडले ॥ १४॥

करके वेष्टित है तैरता चला आता है तब राजकन्याने उसे देखकर सखियों को आज्ञा दी कि इसे लेआओ १२
सखियां राजकन्याकी आज्ञा पावतेही शीघ्र लेआई और राजकन्याको देती भई राजकन्याने उसको ले
कर और कुशाको खोल उसकी सुगंधको सूंघती भई १३ उसके सूंघते ही वोह जो कवलमें मुनिका वीर्य
था उस चंद्रवती नाम राजकन्याके नाभिमंडलमें प्रवेश करता भया ॥ १४ ॥ ॥ ॥

तिसके उपरांत वोह राजकन्या स्नान करके सखियों को साथले अपने स्थानको आती भई और पहले की तरह अपने महलमें सुख पूर्वक क्रीडा करती भई १५ सोउस कन्याको बिना जाने गर्भ होता भया सो सुनो पहले महीने में शुक्र शोणित वीर्य और रुधिर मिलता भया १६ और दूसरे मासमें रोमावली प्रकाशित होती भई और। तीसरे महीनेमें देही भारी होन लगी १७ जिस समय चौथा महीना प्राप्त हुवा स्तनों पर कालारंग और स्तनमुख

स्नात्वाच प्रास्थिता सातु सखीभिः परिवारिता प्रासादे स्वेच्छया पूर्वं क्रीडति स्मयथा सुखं १५

अज्ञात गर्भ स्तस्यासी द्वद्र्वत्यातथा स्परा उ मासेतु प्रथमे तस्या मिलितं शुक्र शोणितं १६

रोमराजितरंगाश्च द्वितीये मासि चाभवत् तृतीये मासि संप्राप्ते शरीरं विपुलायते १७

चतुर्थे च तथा मासे स्तनं कृष्ण मुखं भवेत् पंचमे मासि संप्राप्ते उदरं व्यक्तिमेतिच १८

संभूतमुदरं दीर्घं मासे षष्ठे च सप्तमे दृष्ट्वाचाप्युदरं दीर्घं भ्रष्टतेजास्तदाभवत् १९

उद्विग्नमनसा जाता पतिता शोकसागरे रुदंती तां ततो भीताः पप्रच्छुः कन्यकाः किलः २०

पैस्यामता प्राप्त होती भई और पांचवें महीनेमें उदर जो पेट है सो बड़ा होता भया १८ और छठे सातवें महीने में तो उदर बड़ा होनेसे राजकंन्या अपने उदर को देख भ्रष्टतेजा जाता रहा है तेज जिसका ऐसी होती भई १९। और उद्विग्न कहे व्याकुल मनमें होती भई और शोक के समुद्र पें मग्न कहे डूबती भई और रुदन करती भई। इस दशाको देख भयकरके डरी हुई दासियां पूछती भई ॥२०॥

ना० कि हेदेवि किस वास्ते तुम आनंद में होकर रुदन करती हो यथार्थ जैसा है वैसा कहो तब तो राजकन्या उन सखियों
रो० के वचन को सुनकर बोलती भई २९ हे सखियो यह अद्भुत आख्यान तुमसे क्या वर्णन करूं ब्रह्मा जो कर
१० होनहार था है आली सखियो रघुकुल का दूषण लगावने वाला दुःख है ३० हे दासियो देखो मेरे उदर को गर्भ
१ करके सहित तिसको देखकर मैं रुदन कैसे नहिं करूं अब दासियों ने ऐसा सुना तो अति व्याकुल होती

कस्मात्त्वं रोदिषि देवि कथयस्व यथातथं सखीनां वचनं श्रुत्वा रोदमानाब्रवीदिदं ३१॥
इदमप्यद्भुतं दुःखं भवत्यामि कथं सखि अयुक्तं सम्भवं ह्यालि रघुवंशस्य दूषणं ३२॥
सगर्भमुदरं पश्य तेन रोदिमि किंकरि तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा विह्वलास्ता भवंस्तदा ३३
तदा तु कन्यकाः सर्वा गता राज्ञीसमीपतः विज्ञापयन्ती कन्यायाः कारणं महदद्भुतं ३४॥
भो राज्ञी कथयिष्यामः कन्याया वृत्तमद्भुतं अभयं चेत्प्रदीयेत ब्रूमः सर्वं सुविस्मिताः ३५
राज्ञ्युवाच अभयं दत्तमस्माभिः कथयध्वं यथार्थतः इति तद्वचनं श्रुत्वा तावत्काम्युपचक्रमे ३६॥

भई ३३ तब तो भयभीत होकर संपूर्ण दासियां राणी के पास प्राप्त हुई जाकर विज्ञापना करती भई राजक
न्या का अद्भुत जो कारण है ३४ हे महाराणी राजकन्या तुम्हारी पुत्री का अचंभित कर्म है कहैं जो हमको
अभय दो तो हम वर्णन करैं सत्य सत्य जैसा है तैसा ३५ राणी बोली हे चाकरियो मैंने तुमको अभय दि
या मेरे से तुमको भय नहीं होगा जैसा हो वैसा कहना तब दासियां हाथ जोड़कर प्रार्थना करती भई ३६॥

ना· हे महाराणि हे देवि ऐसा अद्भुत चरित्र तो न कभी हुवा न सुना कहीं सो हे विशालाक्षी बड़े २ नेत्रों वाली जो राजकन्या
टी· का है अति अद्भुत है २७ न तो जहां देवताओं की दृष्टि पड़े न गंधर्व न असुरों न राक्षसों की तिस राजकन्या पर हे देवि
११ और मनुष्यों की तो क्या कथा है २८ तथापि तो भी तुम्हारी को अकस्मात् कुल को दोष लगावने वाला गर्भ होता
॥ भया इतना उन कुमारियों का बचन सुनतेही २९ सो राणी महा दुःख करके भरी गई मूर्छा खाकर पृथ्वी पर

कन्योवाच। अत्यद्भुतं महद्देवि न भूतं न श्रुतं क्वचित् त्वत्पुत्र्या विशालाक्षि कन्यायाश्चरि-
तमुत्तमं २७ न देवा न च गंधर्वा नासुरा न च राक्षसाः तस्या दृष्टिपथे देवि नराणां चैव का क-
था २८ तथापि तस्या गर्भोऽभूद्दुहितुः कुलदूषणः इति तासां कुमारीणां श्रुत्वा वचनमद्भुतं २९
साराज्ञी दुःखसंपन्ना मूर्छिता पतिता भुवि तदा न लब्धसंज्ञा सा ताः कन्या विससर्ज ह ३०॥
राज्ञः सभायां सा गत्वा राज्ञो वचनमब्रवीत्। राज्ञ्युवाच ॥ शृणुष्वेदं महाराज कन्यायावृत्तम-
द्भुतं ३१ पुंसः संसर्गहीनायाः कन्याया गर्भसंभवः कुलस्य दूषणो राजन् यशः कीर्तिविना-

पछाड़ खाकर गिरती भई तदनंतर जब सुचेत हुई तो तिन कन्याओं को वहीं छोड़ा ३० और आप राजा के समीप जा
कर कांपती हुई यह बचन बोली हे महाराज तुम्हारी कन्या चंद्रवती कन्या का जो अद्भुत वृत्तांत सो सो सुनो ३१
जहां पुरुष मात्र के नेत्रों की भी गमन नहीं सो पुरुष के संग करके हीन जो तुमारी पुत्री है तिसको गर्भ रहने का संभव
होना तथा कैसा कुल को दूषण लगाने वाला और यश कीर्ति का ॥ ॥ ॥ ॥

कंपायमान होताभया ॥ ३२ ॥ पश्चात् क्रोध
नाश करनेवाला राणीके वचनको सुनके राजा रघु उसी समय कंपायमान होताभया ॥ ३२ ॥ पश्चात् क्रोध करके राजा रघु बोला हा बडा खेद है अय पापनी कंन्या तैनें यह क्या किया तुझे धिक्कार है ऐसे कहकर्के कंन्या को बन में त्यागन कर्नेकी आज्ञा देताभया तब रुदन करती हुई कंन्याको भृत्य जो चाकर हैं बनके प्रति रथमें बैठाय निर्जन वनमें निक्षिप्ता छोडतेभए ३४ अकेली तिस बनके विषें कैसा बन है शेर चीतों से भरा है कमल सरीखे

रघुस्तद्वचनं श्रुत्वा सकंपश्चाभवत्तनात् ३२ ततः क्रुद्धो नृपः पापे हा कन्ये किमिदं कृतं इत्युक्त्वा तां ददौ राजा कन्यात्यागे विलज्जितः ३३ रोदमाना च सा कन्या भृत्यैर्नीता वनंप्रति रथमारोपयित्वा च निक्षिप्ता निर्जने वने ३४ एकाकिनी वने तस्मिन् व्याघ्रसिंह निषेविते विह्वला भयसंपन्ना कन्या कमललोचना ३५ रुदंती तारशब्देन हा विधे किमिदं कृतं विलंती च दिशा सर्वा यूथभ्रष्टा मृगीयथा ॥ ३६ ॥ इति श्री नासिकेतोपाख्याने चंद्रवती परित्यागो नाम द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥

नेत्रवाली कन्या भयभीता डरी हुई व्याकुल होतीभई ३५ और ऊंचे शब्द करके रोवती हुई बोली हा विधाता तुमने यह क्या किया जो मेरी ऐसी गति हुई ऐसे दशों दिशाओंको देषती हुई कैसे जैसे हिरनों की डारमें से बिछुडी हुई मृगी हिरनी व्याकुल होती है ॥ ॥ ३६ ॥ इति श्री नासिकेतोपाख्याने भाषाटीका सुबोधिन्यां चंद्रवती बनपरित्यागो नाम द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ऋषिबोले हे राजन् ॥ ॥

टी॰ उसीबनमें कोई ऋषि कंदमूलफल लेनेको आवता भया के सामुनि हे अपने सत्यधर्ममें परायण लगाहुवा
ना॰ देषताभया सो वोह मुनि उसरोवती कन्या को देख हे राजा जनमेजय अपने मनमें चिंता करने लगा कि यह दम
१३ ती राजा नलकी स्त्री हे वा स्वर्गकी वेश्या चित्रलेखा हे वा तिलोत्तमा हे २ अथवा उर्वशी हे वा मेनका वा अहिल्या गौत
म ऋषिकी स्त्री हे वा रोहणी चंद्रमा की स्त्री हे वा कोई यक्षणी हे वा गंधर्वकी कन्या वा किन्नरी वा नागकन्या हे ३ अथवा

कश्चित्तत्रसमायातः सत्यधर्मपरोमुनिः कंदमूलफलाकांक्षी ददर्शतत्रकन्यकां १ दृष्ट्वा
तांसुंदरीराजन् स्तर्कयंश्चाग्रतःस्थितः दमयंतीभवेत्किंश्चिच्चित्रलेखातिलोत्तमा २ उर्व
शी मेनकावापि अहिल्या रोहिणीभवेत् यक्षणीचाथगांधर्वी किन्नरीनागकन्यका ३ रा
जकन्याथवाश्रेष्ठा इतिविस्मयमागतः शोभतेबनमध्येतु विद्युल्लेखायथाघने ४ करौ
रागेणशोभंतौ विधात्रा रचितौशुभौ नाभिश्चदक्षिणावर्ता त्रिबलीमध्यसंस्थिता ५ अ
त्यद्भुतंचतद्रूपं दृष्ट्वाप्रोवाचकन्यकां कात्वंकस्यासिरंभोरु किमर्थंबनमागता ॥ ६ ॥

किसीराजा की श्रेष्ठ कन्या हे ऐसे वोह मुनि तर्कना करता अचंभको प्राप्त हुवा और कन्या कैसी शोभावान् है जैसें
बादलमें बिजली शोभादेती हे ४ हाथोंमें मेंहदी लगी हे मानो विधाताने बड़ी चाहनासे बनाया है और संडी कैसे
सी हे गोल और गहरी पेटमें तीनबल पड़े हुवे हैं ५ अति अद्भुत शोभावान् रूप उसका देखकर ऋषि कन्याको
पूछताभया कि हे केलेजैसी जांघवाली तू कौन हे और किसकी पुत्री हे और किसलिये इसबनमें आई हे ॥ ६ ॥

सो राजकंन्या ऋषिका बचनसुनबोली हेमहाराजऋषि तुमकिसलिये पूछतेहो मैंतोअपने कुलकोदोष लगावने वा
ली नतोदेवकंन्या नगंधर्वकंन्या नअसुरकंन्या नाकिन्नरीहूं ७ राजारघुकी पुत्रीहूं सोमेरापिता गर्भके दोषसे
मुझे इस निर्जनबनमें छोड़ताभया ८ तबमुनिउनकेबोले हेसुंदरमुखवाली आजसेलेकर तूमेरी धर्मपुत्रीहुई
और हेराजन् उसरोवतीहुई कंन्याकोअपने साथले अपनेआश्रममेंआवतेभये ९ और बोले कि हेराजा की

ऋषेस्तुबचनंश्रुत्वा कन्योवाचऋषिंप्रति किमर्थंपृच्छसेविप्र मामत्रकुलदूषणं नाहं
सुरीनगंधर्वी नासुरीनचकिन्नरी ७ रघोश्चदुहिताचाहं पितामेगर्भदूषणात् त्यक्त्वा
निर्जनेऽरण्ये रघुर्मामत्रसुव्रत ८ ऋषिरुवाच। अद्यप्रभृतिमेपुत्री धर्मतस्त्वंशुभानने
गृहीत्वातांततः कंन्या मृषिराश्रममागतः ९ अस्मिन्ममाश्रमेरम्ये सुखंतिष्ठनृपात्मजे
उदरंववृधेतस्या गर्भोसौदिवसैःक्रमात् १० मासेतुनवमेतस्याः प्रसूतिरभवन्नृप नासाग्रेरात्तु
कंन्यायाः पुरुषःसर्वलक्षणः ११ ज्ञानवान्बुद्धिसंपन्नो बालोसौविनयान्वितः यताहृष्टापालयंती

बेटीइसमेरेआश्रममें सुखसेंरहो और वैशंपायनजी राजाजनमेजयसेकहतेहैं हेराजन् गर्भउसका दिनदिनबढ़
नेलगा १० और नावेंमहीनेमेंप्रसवकहें लड़का उत्पतहुवा नाकके रस्ते कैसापुत्र सारेशुभलक्षणवाला ज्ञानवान्
और बड़ाबुद्धिवान् ११ और बड़ानम्रथैसेअपनेपुत्रको दुखसे भरीहुई वेहराजकंन्या पालतीभई ॥ १२ ॥

ना॰ टी॰ २५ ।०

एकसमय की बातहै कि उस बनमें वोह राजकंन्या बज़्त रोताज़्वा जो पुत्रहै उससे बोली अरे पुत्र किस
लिये रोताहै तूही मेरे ऊपर पापका कारणहै १३ और तेरही कारण मेरी यह गति भईहै। वैशंपायनजी रा
जा जनमेजयसे कहतेहैं हे राजन् जब उस कंन्या को इसी तरह एक बरस बीता तब उसने एक
पिटारी बनाई १४ उस बालको उसमें धरके कशा ऊपर लपेट बड़े यतनसे श्री गंगाजीमें वहावती भ

एकदारण्यमध्येतं रुदंतं सा नृपात्मजा किमर्थं रोदिषि त्वं मे पापसंपर्ककारकः १३
त्वदीये कारणे पुत्र ह्यवस्थेयं ममेदृशी ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तयासंवत्सरे पूर्णे मं
जूषं तत्र कारितं १४ तस्याभ्यंतरतः पुत्रं यत्नेन परिवेष्टितं कृत्वा तत्र वनोद्देशे
गंगामध्ये विनिक्षिपत् १५ तथा वाक्यं च कथितं पुत्रस्याग्रेनुकन्यया न जानामि क
यं चिह्नैः कुतस्ते गर्भसंभवः १६ येन ते गर्भसंभूतिर्येन जातोसि पुत्रक तेन त्वं मिल
ये सम्यक् यद्यहं दोषवर्जिता ॥ १७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥

ई १५ और ऐसे कहती भई अपने पुत्रके सामने कि मैं नहीं जानती किस तरह मुझे गर्भ हुवा सो जिसके
वीर्यसे तूं पैदा ज़्वा है और मैं निर्दोष हूं तो उसीके पास जा १६ फिर वैशंपायनजी राजा जनमे
जयसे बोले कि हे राजन् ॥ १७ ॥

ना॰ वे राज कंन्या का पुत्र गंगाजीके प्रवाहमें तैरताहुवा जहां ऋषि तपस्या कर रहेथे वहां ही प्राप्तहुवा १८ तिन
टी॰ ऋषिस्वरों में बड़े तपस्यावान् योगी उद्दालकजी उसी समय गंगाजीमें स्नान करने को गएथे १९ देखते
१६ क्याहै कि एक पिटारी प्रवाहमें वहती हुई आई और देखातो उसमें एक बालक शुभ लक्षण वाला ऐसा
१५ संदर कभी देखा नथा देख अचंभे को प्राप्त हुवा २० परंतु अपने योग बलसे देखातो जाना कि यहतो

गतोप्रवाहे गंगाया स्तरन् कंन्या सुतस्तदा आगतश्च नदीतीरे यत्र तप्यंति वाडवाः१८
१८ तेषांमध्ये महायोगी मुनिरुद्दालकस्तथा आगतंतं प्रवाहेण ददर्श मुनिपुंगवः १९
मंजूषे विपुले तास्मिन् बालकं शुभ लक्षणं सुंदरादृष्टपूर्वंन्तु दृष्ट्वा विस्मयमागतः२०
ध्यानेन ज्ञातवान्सर्वं स्ववीर्य प्रभवंसुतं ज्ञात्वायस्वाश्रमे बालं बासयामास लालयन्
२१ पितेतिबदतेबदते मुनिरुद्दाकंप्रति तत्रैव रमतेनित्य माश्रमेचातिशोभने ॥२२॥
॥ ॥ इति श्री नासिकेत्तो पाख्याने पितुः पुत्रो स्पर्शनो नाम तृतीयोध्यायः ३॥ ॥

मेरेही वीर्य से पैदा हुवा पुत्रहै ऐसे जानकर बालक को अपने आश्रम में वास कराते भय लयावते
भए २१ और वह बालक भी उद्दालकजीको पिता कहने लगा और उसी आश्रम में नित्य खेलता भया ॥२२॥
इति श्री नासिकेत भाषाटीकायां सुबोधिन्यां नाम तृतीयोध्यायः ॥३॥ ॥ ॥ ॥

ना· हे राजन् राजा रघुकी पुत्री रोती हुई पुत्रके शोकमें व्याकुल गंगाकेकिनारे आवती भई १ अपने पुत्रको देखने
री· लगी पुत्रकी ममता करकेबहुत रोती भई २ गंगाजीके तीर २ चलते २ एक आश्रमदेखा उसमें अपने पुत्र
१९ को खेलता हुवा देखा ३ कैसा है अपनी उमरवाले बालकोंके साथ उस आश्रममें खेलरहाहै मृगसमान नेत्र
वाली और प्रसन्नहै मुख जिसका ऐसीजो राजकन्याहै सोउसबालकको पूछतीभई ४ कि हे पुत्र तेरा पिता·

रघुवंशोद्भवा कन्या रुदतीशोकविह्वला पुत्रशोकेनसंतप्ता गंगातीरेसमागता १ ॥
वीक्षंतीचततः पुत्रं रुदतीशोकविह्वला रोदमानानदीतीरे प्रयाता व्रतचारिणी २
ददर्शैकंवाश्रमंरम्यं गंगातीरेसुशोभनं पश्यतिस्मसुतंतत्र क्रीडमानंतमाश्रमे ३
वयस्यैर्बालकैः सार्द्धं क्रीडमानंतमाश्रमे पप्रच्छमृगशावाक्षी बालकंमुदितान
ना ४ कस्त्वदीयःपिता पुत्र कस्यायंचाश्रमःशुभः किंनामतस्यविप्रस्य प्रब्रूह्यधुनात
द्वदस्वमे ५ हर्षितंमेमनोभूरि दर्शनात्तवपुत्रकः ॥ ५ ॥ पुत्रउवाच ॥

कहां है और यह सुंदर आश्रम किसका है और उस ब्राह्मणका क्या नामहै सो कह और तेरे देखने से मेरामन
बहुतराजी हुवा सोतूं यथार्थ जैसा हो कहो ॥५॥ मातासे पुत्रबोलता भया ॥

हे मात मेरे पिताका नाम उद्दालक मुनि है और अबवोह फल फूल कुशा समिधा अग्निहोत्र करनेके लिये लेने को गयेहैं शीघ्रही आवेंगे और अबमें देवकर्म पितृकर्म अग्निहोत्र करनेका जो उनका स्थानहै सब लीपूंगा क्योंकि मुझको आज्ञा देगएहैं ७ पुत्रके वचनको सुन फिर माता बोलती भई ८ हे पुत्र तूं मुझे अपनी माता समझकर निश्चिंत रहो अब अग्नि होत्रादिक केस्थानको मैं लीपदूंगी ९ ऐसे कह और सारा घरका कार्य-

मममाता पिताचैव मुनिरुद्दालकोमहान् गतोसौ फलमूलार्थ मग्निहोत्रस्य कारणात् गृहीत्वा समिधोदर्भा नागमिष्यति चैवहि देवतापितृकार्यार्थ मग्निशाला विलेपनं करोमि सततंपुत्र तस्याज्ञा क्रियते मया ७ पुत्रस्य वचनंश्रुत्वा माता वचनमब्रवीत् ८ विद्धिसां मातरंपुत्र त्वंस्वस्थोभवपुत्रक शालाया मग्निहोत्रार्थ मुपलेपंकरोम्यहं ९॥ एवमुक्त्वाच तत्कृत्वा पुनर्गंगा तटंगता १० वैशंपायन उवाच॥ एतस्मिन्नंतरे प्राप्तो मुनिरुद्दालकोबनात् विलेपिता मग्निशालां दृष्ट्वा वचनमब्रवीत् ॥ ११ ॥ विलेपिताच सकला ह्यग्निशालासुशोभना तुष्टोहमद्य मेपुत्र ह्यग्निहोत्रस्य लेपनात् ॥ १२ ॥

करकेर गंगाके किनारे जाबैठी १० हे राजन् इतनेमें उद्दालकजीभी बनसे आवते भए अग्निशालाको सुंदर देखकर बोले ११ अरे पुत्र अग्निशालाके सुंदर लीपनेके कारण आजमैं तुझसे बड़ा राजीहुवा ॥ १२ ॥

पुत्र नासकेत बोले हे पिता आज मैंने कुछ कार्य नहीं किया सारा कार्य मेरी माताने किया है १३ अथ उद्दालक बोले हे पुत्र तेरी माता सारा काम करके अब कहां गई है १४ हे तात लेपन करके गंगास्नान करने गई है इतना सुन कर उद्दालक मुनि बड़े प्रसन्न होकर अग्निहोत्रादिक अपना कर्म करने लगे १५ तिसके पीछे देवकार्य और पितृकर्म जब कर चुके तब बोले हे पुत्र तुम अपनी माताको बुलाओ जो हम देखें ॥ १६ ॥ ॥ ॥

नासिकेत उवाच ॥ निःसंशयं मया तात कर्म किंचित्कृतं नहि । मात्रा मम कृतं सर्व मुपलेपनवाश्रमे १३ उद्दालक उवाच ॥ क्व चास्ति पुत्र ते माता कृत्वा कर्म कथं गता ॥ पितुरेतद्वचः श्रुत्वा पुत्रः पितरमब्रवीत् १४ कृत्वा कर्म ततस्तात गंगा स्नानार्थिनी गता । स हृष्टोसौ ऋषिस्तस्मिन्नग्निहोत्रं चकार ह १५ स कृत्वा देवकार्यं च पितृकार्यं तथैव च उवाचैनं ततः पुत्रं मातरं दर्शयस्व मां १६ पुत्र उवाच ॥ आगच्छ स्वाश्रमे मातराहारं ते ददाम्यहं पिता चैवाश्रमे प्राप्तस्तिष्ठ मातर्यथेच्छया ॥ १७ ॥

माताके पास जाकर पुत्र नासकेत बोला हे मात चलो आश्रममें भोजनके लिये जहां मेरा पिता है और वहांहीं यथा सुखरहो ॥ १७ ॥ ॥

माता बोली हे पुत्र तेरा वचन अजोग है सुनने वालों को भी अधर्म करके युक्त है तेरा यह वचन धर्म के जानने वाले मनुष्य निरादरेंगे १८ क्योंकि पिता वा भाई वा माता वा मामा इतने कन्यादान के योग्य हैं पुत्र माता को नहीं देता १९ सो तू जाकर अपने पिता से कहो तब नासकेत माता का वचन सुन पिता के पास जाकर बोला और सारा माता का समाचार कहा २० सुनकर फिर मुनि बोले हे पुत्र तेरी माता ने यथायोग्य बात

३५:

मातोवाच। अयुक्तं ते वचः पुत्र श्रुतं वै रोमहर्षणं। अधर्मयुक्तं वाक्यं ते न प्रशंसन्ति धर्मवित् १८ पिता वाप्यथवा भ्राता माता वाप्यथ मातुलः ददाति कन्यकां लोके न पुत्रो मातरं ददेत् १९ तथापि तत्र गच्छ त्वं यत्र पूर्वं च तिष्ठसि २० ततो निवृत्तः संहृष्टैर्वचनैर्वरोष्ठमे गतोसौ पितृपार्श्वे तु मात्रा प्रोक्तं तमब्रवीत् २१ एवा मदीया जननी पितास्त्व ऋषिपुंगव॥ उद्दालक उवाच॥ युक्तं सा वदते वाक्यं पुत्र मे निश्चयं शृणु २२ मातरं पृच्छ पुत्र त्वं कस्य वंशसमुद्भवा पुत्रोऽहं ते कथं जातः कथमागमनं कृतं २३

कहो परंतु फिर जाकर पूछो कि किसके कुल की है और पिता का क्या नाम है और मैं तेरा पुत्र कैसे हुवा और कैसे इस बन में आई ॥ २३ ॥ ॥ ॥ ॥

ना॰
दी॰
२९

सो जाकर यथायोग्य सत्य सत्य पूछो तब पुत्र पिताका बचन सुन फेर माताके पास जाकर पूछता भया कि २४ हे जननी मेरे पिताने पूछा है किसके कुलमें पैदा हुई हैं और कैसे मैं तुमारे पुत्र हुवा और कैसे तुम इहां आई सो सत्य सत्य कहो २५ फिर माता बोली हे पुत्र बुद्धिमान् जो तैंने पूछा है सो सुन २६ पूर्व कर्म के संयोग से जो हुवा सो मन लगाके सुन २७ रघु नाम राजा तिनलोकमें विख्यात है तिसके कु

एवं वदस्व यथान्याय्यं सर्वं पृच्छ यथार्थतः सपितुर्वचनं श्रुत्वा पप्रच्छ मातरं प्रति २४
कथयस्वांबिके सत्यं पिता त्वां पृच्छतेधुना कस्य वंशे समुत्पन्ना कथं पुत्रोस्म्यहं तव स्व
२५ कथमागमनं ह्यत्र सत्यं ब्रूहि यथाविधि ॥ मातोवाच ॥ सत्यं शृणु महाप्राज्ञ
यन्मां त्वं परिपृच्छसि २६ पूर्वकर्मानुयोगेन यत्तु जातं विचेष्टितं कथयामि यथान्या
य्यं शृणुष्वैकाग्रमानसः २७ रघुर्नामेति विख्यातो राजा त्रैलोक्यविश्रुतः तस्य वंशे
समुत्पन्ना पुत्री गिरिसुता इव २८ धवलग्रहसंस्थाहं सखीभिः परिवेष्टिता कन्याद
श सहस्रेण रमंती सुखसंयुता २९ ॥

लमें उपजी हूं जैसे हिमाचल पर्वत के पार्वती होती भई २८ और अपने महल में दशहजार कन्या ओंके साथ खेला करती बहुत आनंद पूर्वक ॥ २९ ॥

एक दिन बसंत ऋतुमें सखियों के कहने से गंगा स्नानको जाती भई ३० मैंने जाके नहाते हुवे का देखती हैं
कि कमलका फूल कुशासे बंधा हुवा वहता चला आता है ३१ सो मैंने उस फूलको सखियोंको आज्ञा देकर
मंगाया और सूंघा तिस फूलके बीचमें जो वीर्य था नाकके रस्ते मेरे उदर कहें पेटमें गया ३२ जिससे मुझे
गर्भ रहा इसमें गर्भ रहा संदेह नहीं तिसके पीछे दासियोंने राणीसे कहा राणीसे सुनकर राजा रघु मेरा पिता

ऋतौ वसंते संप्राप्ते गंगातीरे स्तुपुण्यते विज्ञापिता सखीभिश्च गंगास्नानार्थिनी गता
३॰ तत्र स्नानं प्रकुर्वंत्या मया दृष्टं जलोपरि संतरे द्वेष्टितं दर्भैः पुटकं कमलस्य हि ३१ त
द्गृहीत्वा सखीहस्ता दाघ्रातं कमलं मया तस्याभ्यंतरतो वीर्यं नासाभ्यंतरतो गतं ३२ संभ्र
तश्च ततो विप्र मम गर्भो न संशयः सखीभिर्ज्ञापितो राजा कोपाविष्टस्ततो रघुः ३३ अज्ञातग
र्भो मां ताततो वने नत्याजनिर्जने रोदमाना ह्यहं दृष्टा मुनिना तु फलार्थिना ३४ ममोपरि कृ
पां कृत्वा ह्यानीता स्वाश्रमं प्रति प्रसूता चाश्रमे तस्य भवान् जातोसि पुत्रक ३५ ॥

बड़ा क्रोधित हो चाकरोंको आज्ञा देकर मुझे निर्जन बनमें छुड़ावता भया ३३ सो मैं अति दुःखी हुई रुदन कर
रहीथी इतनेमें दैवयोग से एक मुनीश्वर बनफल लेनेके निमित्त आया था सो उस मुनिको दया आई देख
कर मुझे अपने आश्रममें ले जाता भया और अपनी धर्मकी पुत्री बना करके रखता भया तिसके स्थान पर
तूं मेरे पुत्र उत्पन्न होता भया ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ ॥

नासिकाके रस्ते पैदा होनेसे वोह ऋषि तेरा नाम नासिकेत रखता भया ३६ तिसके थोड़े दिन पीछे मैंने
दुःखी होके तुझे पिटारी रख गंगाजीमें बहादिया परंतु फिर तेरे वियोगके दुःखसे कूकती हुई इहां आई
३७ सो हे पुत्र मेरा समाचार तो यह है जो सारा यथायोग्य तेरे आगे मैंने वर्णन करदिया तिसके पीछे
नासिकेत अपने पिताके पास आय कहने लगे ३८ कि हे राज सुनो जैसे मेरी माताने अपना वृत्तांत मेरे

नासिकेन समुत्पन्नो यतस्त्वं मम बालकः नासिकेतेति ते ज्ञात्वा नाम्ना प्रोक्तं महात्म
ना ३६ ततः संस्थाप्य मंजूषे निक्षिप्तस्त्वं मया जले पुनर्वियोगदुःखार्ता वीक्षन्ती त्वां समा
गता ३७ एतदेव मया प्रोक्तमात्मीयास्थितिकारणं ततो गत्वा पितुः पार्श्वे नासिकेतो न्यवे
दयत् ३८ शृणु तात यथान्यायं मात्रा त्वभिहितं मम रघोराज्ञश्च दुहिता गंगास्नानार्थमा
गता ३९ आगतं पद्मपुटकं दर्भेण परिवेष्टितं दृष्ट्वा यच्च गतं वीर्यं किमेतदिति चाब्रवी
त् ४० ततः सा तत्समाघ्राय जले चैव विसर्जयेत् तस्मिन्नेवाघ्रातमात्रे जातं गर्भस्य धारणं ४१

आगे कहा राजा रघुकी तो बेटी है गंगा स्नानको सखियों के साथ आवती भई ३९ देखा कि गंगाजीमें एक फूल
कंवलका कुशासे लिपटा वहां आया उसे मंगाकर सूंघती भई ४० सूंघकर उसको जलमें फेंकदिया पंरन्तु
सूंघतेही उस पुष्पके गर्भ रहता भया ॥ ४१ ॥

रसवानका सुन राजा रघु बड़ा बुद्धिवान् कलंक के भयसे अपनी कन्याको बड़े भयानक वनमें छोड़ताभया ४२ यह सारा समाचार आप नानाताका कहाहुवा अपने पिताके आगे वर्णन करताभया ४३ पुत्रके वचनको सुन उद्दालक ऋषि अचंभेको प्राप्तहुवे और बोले अहो बड़ा आश्चर्य है ब्रह्माजीका वचन सत्यहुवा ४४ ऐसें कह पुत्रसे बोले हे पुत्र ४५ तुम अपनी माता सहित इस आश्रममें बसो और मैं राजा रघुसे कन्या मांगनेको

तच्छ्रुत्वा क्रोधमापन्नो राजा रघुरुदारधीः तत्याज कन्यकां चैव वने सिंहादिसेविते ४२
एवं सर्वं तु वृत्तांतं नासिकेतेन भाषितं ४३ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा ऋषिर्विस्मयमागतः अहो ब्र
जापते सत्यं संभूतं वचनं तव ४४ इत्युक्त्वा स्वागतं विप्रः पुनः पुत्रं स चाब्रवीत् ४५ तिष्ठ पु
त्र त्वमत्रैव मात्रा सह तपोवने तस्यार्थी गमिष्यामि रघोः राजस्य वेश्मनि ४६ एवमुक्त्वा
ततो विप्रः धान्यार्थी समगच्छत क्रमेणैव ततः प्राप्तः शुभं च रघुमंदिरं ४७ स दृष्ट्वा विप्रमायां
तं ज्वलंतमिव पावकं अर्घ्यायवार्घ्यपाद्याद्यैरर्चयच्चासनादिभिः ॥४८॥

उसके घर आताहूं ४६ ऐसे कह कर ब्राह्मण तो कन्याके निमित्त चले चले राजमंदिरसें पहुंचते भए ४७ सो राजा रघुने देखा कि ब्राह्मण अग्नि समान तेजवान् आवतीहै देखकर खड़ाहो दंडवत् कर चरन धो चरणामृत लेताभया ॥ ४८ ॥ ॥ ॥

और ऊंचे आसन पर बैठाय प्रदक्षिणा की और मधुपर्क पुष्प धूपसे पूजाकी सुखसे बैठाय ४९ हाथजोड़कर राजा बो
ले हे महाराज आज मेरा जन्म सफल हुवा और मेरी क्रिया भी आज सफल हुई और आज मेरा दान सफल हुवा जो
आपके दर्शन हुवे ५० सो हे महाराज कृपासिंधु आपकी प्रसन्नताके लिये सैकड़ों हजारों गौ और किरोड़ों अशरफी
और घोड़े हाथी भेंट करूं और नौका सारा राज भी आपही का है लीजे ५१ ऐसे राजाने कहा तब ऋषिसत्तम बोले

कन्याप्रदातिथिंचैव मधुपर्केणाचार्चयत् सुखासीनंचतंमर्त्यैरघुर्वचनमब्रवीत् ४९॥
अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफला क्रिया: अद्य मे सफलं दानं यज्जातं तव दर्शनं ५० गवांश
तसहस्रं मे हेमकोटिशतानि च तुरंगमादि सर्वं मे राज्यं तुभ्यं निवेदितं ५१ उद्दालक उ
वाच॥ नाहं तुरंगमादीनि हेमकोटिशतानि च राज्यं नेच्छामि राजेंद्र कन्यामेकामहं वृ
णे ५२ रघुरुवाच॥ राज्यं ददामि ते विप्र कन्या मम न विद्यते कन्यैका मे पुराह्यासीत्सा मृता
मुनिसत्तम ५३ उद्दालक उवाच। न सा मृता तु कन्या ते मम तिष्ठति चाश्रमे मह्यं तां देहि रा
जेंद्र सत्यधर्मपरायण ५४ रघुरुवाच॥

हे राजन् तुम ऐसेही दानी हो परंतु हम तपोधन हैं हमारी तपस्याही धन है घोड़े हाथी सोना राज्य इनमें किसी वस्तु की भी इच्छा
नहीं केवल एक कन्या मांगने आया हूं ५२ तब यह सुनकर राजा बोला कि महाराज राज्य तो देता हूं कन्या मेरे इस समय न
हीं है पहले एक कन्या थी सो मरगई ५३ उद्दालक बोले हे राजन् सत्यधर्ममें परायण तुम्हारी कंन्या मरी नहीं है मेरे
स्थान पर ठहरी है तिसी कन्याको मैं मांगने आया हूं ५४ फिर राजा बोले हे महाराज

वो कन्या आपके आपके आश्रममें कैसे ठहरी है यह बात अचंभेकी मानताहूं जैसे है तैसे कहो ५५ फिर ऋषि बोले हे राजन् प्रजापति जो विधाता है उन्होंने पहले वचन कहाथा उनका रचा किसीसे देवता दैत्योंसे निवारण नहीं होता ५६ सो कहते हैं। कि मैं पहले ब्रह्माजीके पास अपना वंश बढावनेके लिये विवाह को गयाथा और जाकर कहा कि पिताका धर्म है पुत्र को विवाहना मेरा विवाह होतो वंश आगेको बढे ५७ सो ब्रह्माजीने मुझे छूटतेही कही है पुत्र पहले तेरे पुत्र होगा

आश्रमे तु कथं कन्या त्वदीये विप्र तिष्ठति कौतूहलमिदं मन्ये कथयस्व यथार्थतः ५५ ऋषिरुवाच ॥ प्रजानां पतिना वाक्यं पुरा यन्मे नियोजितं निर्मितं दैवसंयोगाद् दुर्वारं तत्सुरासुरैः ५६ वंशास्थितेः कारणाय गतोहं यत्र पद्मभूः गत्वा तत्र मया राजन् भार्या वंशविवर्द्धिनी प्रार्थना राजशार्दूल सूर्यवंशसमुद्भवा ५७ तेनोक्तं प्रथमं पुत्रः पश्चाद्भार्या भविष्यति तव भार्या च विप्रेन्द्र रघुवंशसमुद्भवा ५८ एवमुक्त्वा ततो ब्रह्मा तत्रैवान्तरधीयत ततोहमाश्रमे राजन्नागतश्चिन्तयान्वितः ५९ कथं मे प्रथमं पुत्रो भार्या पश्चाद्भविष्यति तप्यमानेच तपसि मे रेतो तोत्सर्गो बभूवह ॥ ६० ॥

पीछे स्त्री आवेगी राजा रघुके वंशकी ५८ ऐसे कहकर ब्रह्माजीतो उसी समय छिपगये और मैं आश्रममें आया परन्तु चिंता करता हुआ ५९ क्योंकि पहले पुत्र मेरे कैसे होगा और पीछे स्त्री कैसे आवेगी और ऐसा भी विचारा कि मेरे पिता ब्रह्माने हांसी करी कि बुढापेमें कौन पुत्री देगा और ऐसाभी विचारा कि विधाताका वाक्य झूठ नहीं होता ऐसा विचार करता हुआ फेर तपस्यामें लगा परंतु मन स्त्रीके विचारमें था इसी कारण वीर्य निकलताभया ॥ ६० ॥

निसवीर्यको मैंने कमलके फूलमें रख कुशासे लपेट गंगाजीमें गेरदिया ८२ हे राजन् उसी समय तुम्हारी कन्या गं
गास्नानको गईथी तिसने उस पुष्पको सूंघ्यो सुना॥ कमलनालके उसीसे गर्भरहा इसमें संदेह नहीं तिसपीछे नाकके
छेदसे पुत्र हुवा नासिकेत उसका नाम हुवा ८३ वैशंपायन बोले राजाजनमेजयसे बोले हे राजन् इस बातको मुनिसे सु
नकर राजा रघु दुःखमें होकर अपने महलमें जाकर अपनी राणीसे कहताभया ८४ फेर सभामें आय मुनिसे

तत्सयाय सपुटके वार्यादितस्य स्वाश्रमः कुशैश्च विवर्यन्नानु गंगामध्ये विसर्जितं ८१
ततः सा कन्यका राजन् गंगास्नानाय्यमागता तदाघ्राय्य पुष्पं सा रूपं गंगामध्ये समागतं
८२ तेनैव गर्भसंभूतिः मम वीर्यान्न संशयः नासापुटेन पुत्रो निष्क्रान्तो नासिकेतस्ततः स्मृतः ८३
वैशंपायन उवाच। ततो विस्मयमापन्नो रघुरंतःपुरे व्रजन् तद्वृत्तांतं ततो राजा महिष्यै
त्वन्यवेदयत् ८४ राजा सभामागत्य मुनिं वचनमब्रवीत्। रघुरुवाच। कन्यां दत्तामिते वि
प्र पुत्रेण संयुक्ताः रथेषु मुने रम्ये स्थित्वा गच्छ स्वमाश्रमं समानुजाविभिर्युक्तश्चानयस्व
सुतां मम एवमुक्तस्ततस्तेन मयबहिश्चकारक्षः ऋष्यानीता च तदा कन्या सपुत्रा रथसंस्थिता ८५

कहा हे महाराज मैंने यहां कन्या तुमने हंगा अब तुम रथमें बैठकर अपने आश्रमको जावो और मेरी कन्याको
रथमें बैठायके आवो तब उद्दालकने वैसाही किया रघुके सहित उसकन्याको राजाके नगरमें लावतेभये ८५

तब राजा रघु देखकर प्रसन्न होता भया और वेद की रीति से विवाह कर ऋषिको देता भया और तिसका पुत्र भी-
देता भया ६८ और दहेज में दास दासी धन धान्य मोती और रत्नों के गहने हार· कुंडल· माला· कड़े जड़ाऊ ६९
और रथ· हाथी घोड़े गौ· भैंस· वस्त्र· राजा रघु पुत्री के स्नेह से बहुत सा देता भया ७० मुनि महाराज इतना दा
यज देख प्रसन्न होके बोले बहुत मीठी कोमल वाणी से ७१ हे राजन् पति राजा मैं तपस्वी वन में रहने वाला

दत्ता कन्या नरा राज्ञो प्रोत्फुल्ला भक्तिवर्द्धिनी विवाहयत्ततो राज्ञा पुत्रस्तस्मै निवेदितः ६८
दासान् दासीर्धनं धान्यं मुक्ताभरणकुंडले हारग्रैवेयकेयूरान् नानामाणिक्यशोभितान्
६९ रथान्नागान्हयान्वस्त्रं महिषीगोधनानि च राजा रघुरदात्सर्वं दुहित्रे स्नेहसंयुतः ७०
वैशंपायन उवाच ततो व्रजं बनं विप्रो राजानं विनयान्वितं धनं नानाविधं दृष्ट्वा मुनिर्वचनमब्र
वीत् ७१ किं करोम्यहमेतेन धनेन विपुलेन च तवैव सर्वं यथा राजन् गृहे तिष्ठतु सर्वत ७२
इत्युक्त्वा राय मखिलं प्रतर्प्यागात्तपोवनं प्रविष्टः स्वाश्रमे विप्रः सपुत्रः सकलत्रकः ७३
रेमे तया चंद्रवत्या तत उद्दालको मुनिः नासिकेतः सुतो भक्तो गंगातीरे सुखान्वितः ७४

इतना सामान लेकर क्या करूंगा इसको तो आपही रखिये ७२ सब सामान छोडकर अकेला स्त्री और पुत्र सहित अ
पने आश्रम को आवता भया ७३ आनकर अपने आश्रम में चंद्रवती अपनी स्त्री से आनंद पूर्वक विहार करने
लगे उद्दालक जो महात्मा हैं ७४ ऐसे वैशंपायनजी राजा जनमेजय से कहते भए

उनका पुत्र नासिकेत बड़ा बुद्धिवान् अपनी उमरवाले बालकों केसाथ खेलाकरें एक समय उद्दालक मुनि अपने
पुत्रको क्रोध करके शाप देतेभये सो उस शापसे नासकेत संयमनी नाम धर्मराजकी पुरीको जाकर वैसें
ही फेर आवतेभए १५ यह इतिहासकी जो कथा है संदर तुमसे वर्णन करी हे राजन् कैसी ये कथा है बड़े
पुण्यके देनेवाली है जो कहने सुनने वाले हैं वो सब पापोंसे छूटजाते हैं ॥ १६ ॥ ॥ ॥

विजज्ञारसुदायुक्तो वयस्यैर्बालकैर्वृतः एकदा तं निजंपुत्रं शशापचपितारुषा त
तःसंयमनींगत्वा तथैवपुनरागयौ १५ इतिहासकथांरम्यां पुण्यां पौराणिकीं शुभां
कथयेत्स्मृणुयाद्यश्च सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १६ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्या
ने चंद्रवती विवाह वर्णनोनाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ जनमेजयउवाच ॥ एतन्मे
कथय हे विप्र संशयंमेह्यपानुद दुर्लभं पुत्रनामापि मनुष्याणां तपोनिधे ॥ १ ॥
किमर्थं दत्तवान् शापं पुत्रस्युद्दिश्यसुव्रत कथं यमपुरींप्राप्तो कथं चागतवान्पुनः २

॥ इति नासिकेत भाषाटीका सुबोधिन्यां चंद्रवती विवाह वर्णनं नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ इतना सुनकर
राजा जनमेजय बोले हे वैशंपायनजी महाराज मैं इतना पूछताहूं कि इस संसारमें मनुष्योंको तो पुत्रका नामभी
दुर्लभ है १ और जिसमें भी नासिकेत सरीखा आज्ञाकारी सत्पात्र पुत्र तिसको उद्दालकजी महात्मा कैसें शापदेतेभए
और कैसें फेर दारुण यमपुरीको जाकर आवतेभए यह जो मेरा संदेह है कृपाकरके दूरकरो ॥ ॥ २ ॥ ॥

इतना सुन वैशंपायनजी बोले हे राजन् सुनो पहले जैसे शापहुवा और फिर यमपुरीसे जैसे आवते भए सो
सुनो उद्दालक मुनियोंमें श्रेष्ठ एकदिन अपने पुत्रसे बोले ४ कि हे पुत्र तुम वनको जाकर फल फूल कुशा
समिध कहें ढाककी लकड़ी लेआओ अग्निहोत्रकेलिये ५ पिताकी आज्ञा मानकर नासकेतजी वनको
चलेगए वनमें जाकर एक सुंदर सरोवर देखतेभए ६ कैसा सरोवर है तरह २ के वृक्ष और वेला हैं

वैशंपायन उवाच। शृणु राजन् पुरावृत्तं यथा शापो नियोजितः पित्रा वै प्रेषितेनागत्वा हर्षि
तोयमसादने ३ आगतः पुनरेवाथ तत्सर्वं कथयामि ते उद्दालको मुनिवरः सुवृत्तं पुत्र
मेकदा ४ उवाच पुत्र गच्छेति वनं शीघ्रं समानय समित्कुशाफलानीति ह्यग्निहोत्रं यथा भवेत् ५
इति श्रुत्वा पितुर्वाक्यं नासकेतो वनं वने जगाम तत्र स मुनिर्यत्रास्ते शोभनं सरः ६ दृष्टवान्
एवं कुसुमाढ्यं नानाद्रुमलताकुलं फलमूलयुतं चैव नानापक्षिनिषेवितं ७ शुभे सरो
वरे तत्र विविधोत्पलमण्डिते स्नानं कृत्वानुनं चैव विधिदृष्टेन कर्मणा ८

फल फूल हैं सुंदर अनेक तरहके पक्षी बोल रहे हैं ७ अनेक तरहके कमल फूल रहे हैं तहां नासकेत स्नान
करता भया और नित्यनेम भी सब अपना करता भया ८॥

देवपूजन कर्मसुपुष्प नैवेद्य करके देवऋषिपितृतर्पण कर्ता भया ९ और योगाभ्याससें धारणा और ध्यानये जो कामहैं सोभी किये उसी सरोवरपर १० तिस कर्म करने और योगसाधनेसे बिलंब कहिए देर होती भई तब उसनेबिचारा कि मेरे पिताके अग्निहोत्रादिक करनेमें विघ्न हुवा मेराकियाहुवा ऐसें विचार शीघ्रहो पिताके पास आश्रमको आवता भया ११ तिसके उपरांत उद्दालक मुनि पुत्रको देरमें आया देखकर बड़े क्रोधको प्राप्त

देवार्चनंकृतंतेन दिव्यपुष्पैश्चनारजैः नैवेद्यफलमूलैश्चदेवतापितृतर्पणैः ९ योगमा
स्थायतत्रैव धारणाध्यानकर्मणा देवार्चनंचयोगंच नित्यंसंपादयन्ततः १० पितुर्मेवि
घ्नमुत्पन्नमग्निहोत्रंतुमत्कृते इतिनिश्चित्य मनसा पितुराश्रममागमत् ११ ततउद्दाल
कः क्रुद्धो दृष्ट्वापुत्रंचिरागतं उवाचक्रोधताम्राक्षो ह्यग्निहोत्रविघातकं १२ किंतवफलमूला
र्थं चिरंगत्वावनांतरे स्थितस्त्वयामंदभाग्य यज्ञेविघ्नःकृतोमम १३ अग्निहोत्रेणतृप्यं
ति ब्रह्माद्या देवतागणाः तथापितृगणाः सर्वे तेषांविघ्नःकृतस्त्वया ॥ १४ ॥

हुवे और बोले १२ अरे निर्भाग फल फूल लेनेको बनमें गयाथा इतनी देर तैने कहां लगाई कहांजाकर बैठ रहा मेरे यज्ञकरनेमें आज तैंने विघ्नकिया १३ अग्निहोत्र करने से ब्रह्मासे आदिलेके देवता और पितर तृप्त होतेहैं तिससें आज तैंने विघन किया ॥ १४ ॥ ॥ ॥

ऐसे पिताके बचनको सुन नासिकेत बोले हे तात यह जो अग्निहोत्र है सो संसारका बंधन है इससे जन्म मरण और मोह होनाहोताहै और भवसंसार में पड़नाभी निश्चय होताहै १६ इससे तो योगाभ्यास करनेसे परे और कोई श्रेष्ठ उपाय इस संसार समुद्रके पार उतरनेका नहीं है १७ हे तात देखो ब्रह्मासे आदिले देवता और इंद्रसे आदिलेकर कश्यप ऋषिके पुत्र सब योगसाधनसेही परमगतिको प्राप्त होतेभए १७ पुत्रके बचन

पितुस्तद्वचनंश्रुत्वा प्रत्युवाच सतापसः १५ अग्निहोत्रमिदंतात संसारस्यतुबंधनं जन्ममृत्युमहामोहा संसारेपतनंध्रुवं १६ योगाभ्यासात्परंनास्ति संसारार्णवतारणं ब्रह्माद्याःदेवताःसर्वे इंद्राद्याः कश्यपात्मजा १७ सर्वेयोगवशात्सिद्धिं गतास्तेपरमांगतिं उद्दालकउवाच। सर्वाश्रमेषुभोपुत्र येचान्ये तपसिस्थिताः अग्निहोत्र मुपासंते स्वर्गलोकायसत्वरं १८ नासिकेतउवाच। स्वर्गंगत्वापुनर्जन्म संसारेभवति ध्रुवं योगाभ्यासात्परंनास्ति नभूतोनभविष्यति १९ नकार्यमग्निहोत्रंतु योगाभ्यासंकुरुप्रभो ॥ २०॥

कोसुन ऋषिफेर बोलतेभए अरे पुत्र ये सब ऋषि तपस्या और अग्निहोत्र कररहेहैं स्वर्गलोकके प्राप्त होनेके लिये १८ फेर पुत्र बोला पिताजी स्वर्गमें जाकर तो फिर संसारमें जन्म होगा निस्संदेह परंतु हां योगसाधनसे तो संसारमें आवागमनसे छूटजाताहै १९ मतकरो अग्निहोत्र योगसाधन उत्तम बस्तको छोड़के ॥ २०॥

वैशंपायनजी बोले हे राजन् उद्दालक मुनि फेर क्रोधवान् हो बोले अरे पुत्रोंमें नीच पुत्र तूं ऐसा ज्ञानी और बुद्धि
वान् हुवा जो पिताको सीख देने लगा जात् यमपुरीको शीघ्रही ऐसा शाप देते भए २१ जिस समय ऋषिने ऐसा
उग्र शाप दिया उसी समय नासिकेत पृथ्वीपर पछाड़ खाकर गिरते भए फेर उठकर सावधान हो डंडोत
करी नासिकेत महात्माने २२ और बोला हे महाराज अब तुम्हारी आज्ञासे जहां धर्मराज है तहांही मैं जाताहूं

वैशंपायन उवाच। उद्दालकं स्ततः श्रुत्वा क्रुद्धः सत्तनयं प्रति उवाच गच्छ शीघ्रं त्वं यमं पश्य
सुताधम २१ ततः शापेन रौद्रेण पतितो धरणीतले प्रमाणमिति चान्युक्त्वा नासिकेतो महात्म
वान् २२ वैवस्वतस्थितिर्यत्र पश्यामेवं तवाज्ञया पतितं पुत्रकं दृष्ट्वा ऋतिर्जातोपि विह्वलः
२३ महाशोकेन संतप्तो विललापातिदुःखितः हा पुत्र हा वराशिष्यो हा ज्ञानिन् हा सुबुद्धिमान्
२४ अहं पापी दुराचारी अहं क्रोधी द्विजाधमः यत्र वैवस्वतो राजा दारुणा नरकास्तथा २५
तत्र त्वया न गंतव्यं आयास्त्वं त्वं विमर्षय २७ एवं विलाप्य मानं तं पुत्रं पुनरभाषत ॥२७॥

तब तो ऋषि गिरे हुवे पुत्रको देख बड़े दुःखी होते भए २३ बड़े शोकसें दोनों माता पिता विलाप करने लगे हाइति खे
दे बड़ा खेद है हा पुत्र हे बालक हे ज्ञानवान् हे बुद्धिवान् पुत्र २४ मैं बड़ा पापीहूं खोटे विचार वालाहूं बड़ा क्रोधीहूं
ब्राह्मणोंमें नीच हूं जो क्रोधकर ऐसा शाप देता भया जहां धर्मराजकी पुरी है तिसमें बड़े २ भयानक नरक हैं २५
तहां तेरा जाना अच्छा नहीं तूं मत जा ॥ २६ ॥ २७ ॥ ॥

ऐसें विलाप करते हुवे पितासे नासिकेत बोले महाराज तुमको नमस्कार है तुम्हारे बचनको सत्य करूंगा हे ब
डीबुद्धिवाले तात २९ देखोसत्य हीसे सूर्यतपताहै और सत्यहीसे पृथ्वीजलपर खड़ीहै और सत्यहीसे अग्निप्रका
शकरतीहै सबकार्य सत्यसेहीहैं ३० हजार अश्वमेध यज्ञभी सत्यके बराबर नहींहोता सत्यहीसे स्वर्ग और
परमगति होतीहै सत्यधर्म करके रहित जो मनुष्य निश्चय करके नरकमें जाताहै ३१ अब तुम सब तरहसेशो

यतस्तेमेनमस्कारो यत्वयोक्तंबचोनघ तत्सत्यंच करिष्यामि नान्यथास्यात्कदाचन: २८
आज्ञांतव करिष्यामि मैवंवद महामते सत्येन तपते सूर्यो सत्येन पृथिवीस्थिता २९
सत्येन ज्वलिते वह्निः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितं अश्वमेधसहस्रंवै सत्येन तुलये न्नहि ३० सत्ये
न गम्यते स्वर्गे सत्येन परमांगतिं सत्येधर्मविहीनस्य नरकेपतनंध्रुवं ३१ तस्मात्सर्वं प्र
यत्नेन शोकंत्यक्त्वास्थिरोभव दृष्ट्वायमपुरींसद्यो धर्मराजस्यमंदिरं। शीघ्रमेवागमिष्या
मितवपादसमीपतः ३२ वैशंपायनउवाच॥ पितृपादौप्रणम्यादौ नमस्कृत्वास्वयंभुवे॥
नासिकेतो विनीतात्मा क्षणेनांतरधीयत ॥३३॥

कछोड़ बैठेहो मैं यमराजकी पुरी और मंदिरको देखकर जलदी तुम्हारे चरनोंमें आन प्राप्त होताहूं ३२ वैशंपाय
नजी बोले कि हेराजन् नासिकेतजी अपने माता पिता और जगत् स्रष्टा ब्रह्माजीको नमस्कार कर क्षणमात्रमें
अंतरधान होते भये ॥ ३३ ॥ ॥ ॥

शापको याद करतहुवे पवनके वेगसमान जहां आप धर्मराज बैठेथे प्राप्तहुवे ३४ सूर्यके पुत्र अग्निवत्‌प्रा॰
प्रकाश जिनका बड़े बलवान् सिंहासनपर विराजमान ऐसे धर्मराजजीके दर्शन करताभया ॥ ३५ ॥
॥ ॥ इतिश्रीनासिकेत भाषाटीका सुबोधिन्यां धर्मराजदर्शनोनाम पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ ५ ॥
वैशंपायनजी बोले हे राजन् जब नासिकेत सभामें गये कैसेहैं विद्या और नम्रता करके सहित हैं जाकर धर्मराज

नस्यसर्वप्रयत्नेन शापमेवप्रलापयन् संप्राप्तोवायुवेगेन यत्रराजास्वयंयमः ३४ ददर्श
धर्मराजानंज्वलंतमिवपावकं सिंहासनसमारूढं सूर्यपुत्रंमहाबलं ॥ ३५ ॥ इतिश्रीना
सिकेतोपाख्यानेधर्मराजदर्शनोनाम पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ प्रविष्ट
स्तुसभामध्ये विद्याविनयभूषितः तेनस्तोत्रं समारब्धं धर्मराजस्यशोभनं १ नासिकेतउ
वाच ॥ नमस्तेधर्मराजाय त्रैलोक्यस्यपितामह सर्वलोकस्यसंगोप्त्रे नमःसर्वहितायच २
मार्तंडसूनवेदिव्य देवायामिततेजसे नमस्तेरविभक्ताय निर्मलायचतेनमः सुप्रभाढ्य
स्वरूपाय नमस्तेसुरपूजितः ॥

की स्तुति करते भये १ हे धर्मराज तीनलोकके पितामह कहे दादाहो तुमें नमस्कार है हे सर्वलोकके हितकरनेवा
ले तुमको नमस्कार है सूर्यके पुत्रहो बड़ा तुमारा पराक्रम है नमस्कार है २ सूर्यके भक्ति निर्मल तुम्हारा स्वरूप शोभा
युक्त संपूर्ण देवता तुम्हारी पूजाकरैं तुमको नमस्कार है फेरे कैसेहो ॥

धर्मके अधिकारी बहुत तुम्हारे रूप तुम्हे नमस्कार है ४ धर्मके जानने वाले पापियोंके हे यमे को नमस्कार ॥ ३ ॥ नके कु
हो धर्मकी मूर्ति हो तुम्हें नमस्कार है ५ वैशंपायनजी बोले हे राजेन्द्र नासिकेत मरोक ज्ञानस पापा ॥ पा३ करन
वाली है जो मनुष्य इस स्तोत्रको पढ़ेंगे ६ उनको दुःख रोग भय न होगा और यमे राजा प्रसन्न होंगे और नरक
को कभी नहीं देखेंगे ७ नासिकेतकी स्तुति सुनके धर्मराज बोले कि हे ब्राह्मणके पोत्र में तुमपर प्रसन्न हूं यहां

धर्माधिकारिणेस्त्रीमन्न मस्ते बहुरूपिणे ४ नमोधर्माय महते ३ मः पापांतकाय त
ज्ञानविज्ञानरूपाय धर्मरूपे नमोस्तुते ५ वैशंपायन उवाच ॥ नासिकेतकृतं स्तोत्रं त
त्यक्षपापनाशनं यः पठेत्प्रयतः सम्यग्धर्मराजस्य कीर्तनं ६ नैवतस्य भवेद्व्याधिः काये
रोगभयंनहि यमतुष्टो भवेत्तस्य नरकांश्च न पश्यति ७ श्रुत्वा विप्रेणे स्तोत्रं धर्मराजोव
चोब्रवीत् तुष्टोहं तव विप्रेन्द्र ब्रूयागमनकारणं ८ नासिकेत उवाच ॥ पितृशापेन क्रुद्धोहं
यमं पश्येति भानुजे त्वया ज्ञया च संप्राप्तो योग मार्गेण वेगतः ९ यमराज उवाच ॥

इहां अपने आवनेका कारण कहो ८ नासिकेत बोले हे धर्मराजजी मै अपने पिताके शापसे आया हूं तुम्हा
रे दर्शनको योग मार्गकरके प्राप्त हुवा हूं ॥ ९ ॥ धर्मराजजी बोलते भये ॥ ॥ ॥

ना॰ टी॰ ३७

हे ब्राह्मण मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हुवा हूं हे बुद्धिमान् यथा सुख रहो और तेरे मनमें हो सो वर मांग। १० हे यमराज जो मेरे ऊपर प्रसन्न हो तो यह वर मांगता हूं तुमारी सारी नगरीको देखनेकी इच्छा है और चित्रगुप्तजो लेखक हैं और पापी जहां पकाये जाते हैं और धर्मात्मा लोग जहां सुख भोगते हैं यह सब देखनेकी इच्छा है हे सूर्यके पुत्र १२ वैशंपायनजी बोले हे राजन् उसी समय धर्मराजने अपने दूतोंको बुलाकर क अरे दूतो यह जो सत्यवान् बुद्धिवान्

किमिच्छसि महाप्राज्ञ विप्रास्व यथासुखं वरं ब्रूहि प्रयच्छामि यत्ते मनसि वर्तते १० नासिकेत उ
वाच। यदि तुष्टोसि मे देव वरमेनं प्रयच्छ मे पश्यामि ते पुरीं सर्वां चित्रगुप्तं च लेखकं ११ इच्छामि प
च्यन्ते यत्र सुकृतिः सुखमेधते यत् तदिच्छामि संद्रष्टुं प्रसादं कुरु सूर्यज १२ वैशंपायन उवाच। किंक
रांस्तत्र चाहूय धर्मराजेन भाषितं यं त्विदं प्रमहाप्राज्ञं सत्यव्रतपरायणं १३ पितुः शापादिहायातो द
र्शयंतु पुरीं मम १४ तदा ते किंकराः सर्वे चित्रगुप्तस्य वेश्मनि गत्वा ते देवसहिता नासिकेतेन भारत १५
चित्रगुप्तस्य सर्वे ते द्वारपालमथाब्रुवन्॥ यमेन प्रेषितो विप्रो नासिकेतो महात्मवान् व
चनं चास्य श्रोतव्यं दर्शयध्वं पुरं महत्॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मण है पिताके शापसे मेरी पुरीमें आया है १४ सो इसको पुरी देखनेकी इच्छा है चित्रगुप्तजीको जायकर कहो १५ यमकी आज्ञा सुनतेही चित्रगुप्तके दूत जो द्वारपाल थे शीघ्रही जाय चित्रगुप्तसे कहते भये १५ कि हे चित्रगुप्त महाराज धर्मराजका भेजा यह ब्राह्मण आया है सो द्वारपर ठहरा है धर्मराजकी आज्ञा है कि

ब्राह्मणको मारी पुरी देखनेकी इच्छाहै सो सुखपूर्वक दरसावना योग्यहै १७ चित्रगुप्त दूतोंके बचनको सुनकर बोले कि इस
ब्राह्मणको दूतों सहित मेरे पास शीघ्रही लाओ १९ इतना सुनतेही सबको चित्रगुप्तके पास लेजाते भए फेर दूतों से चित्र
गुप्त बोले कहो क्या कार्यहै २० यमके दूत बोले हे चित्रगुप्त महाभाग यमराजने आज्ञा दीहै कि यह जो सत्यधर्म
वाला ब्राह्मणहै २१ अपने पिताके शापसे यहां योग मार्गकरके आयाहै जो इसकी इच्छाहो सो पूर्ण करो २२ चित्रगुप्त बोले

इतिदूतवचः श्रुत्वा द्वारपालो ब्रवीद्वचः चित्रगुप्तं नमस्कृत्य धर्मराजस्य लेखकं १७ व
चनंश्रूयतां देव यमेन प्रेषितो द्विजः सहितो यमदूतैश्च द्वारे तिष्ठति तेनघ १८ चित्रगु
प्तउवाच। विप्रं नेष्ठितोदूत समानय ममांतिकं १९ चित्रगुप्तवचः श्रुत्वा सोपि सर्वान्
समानयत् उवाच चित्रगुप्तस्तान् किंकार्यं ब्रूतसत्वराः २० दूताऊचुः प्रेषितास्मो महा
भागधर्मराजेन धीमता नेनाज्ञप्तं महाप्राज्ञ तत्कुरुष्वाविलंबितं योयं विप्रो महाप्राज्ञः
सत्यधर्मपरायणः पितुः शापाच्च योगेन प्राप्तो वैवस्वतः पुरे अस्य बांधाप्रकर्तव्या यद्य
दिच्छति वै द्विजः २१ चित्रगुप्तउवाच। ब्रूहि विप्र महाप्राज्ञ यत्वमिच्छसि तद्वद धर्मरा
जस्य आज्ञा वै प्रमाणं मुनिसत्तम २३ नासिकेतउवाच ॥ ॥

कि हे ब्राह्मण देवता जो तुम्हारी इच्छाहो सो कहो क्योंकि धर्मराज महाराजकी जो आज्ञाहै सो मुझे
प्रमाणहै करनी योग्यहै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ द्विजसत्तम ॥ २३ ॥ नासिकेत बोले ॥

हे तेजवान् धर्म ऽ धर्मके विचारने वाले संपूर्णजीवोंके शुभ अशुभ कर्मके जाननेवालेहो॰ वैशंपायनजी बोले हे राजन् ऐसे जब नासिकेतने स्तुति करीतो चित्रगुप्तजी बड़े प्रसन्न होकर बोले २५ ज्ञान विज्ञान करके संयुक्त हे द्विजोंमें श्रेष्ठ मैंतेरे ऊपर प्रसन्न हुवा जो तेरी इच्छाहो सोवरमांग २६ इतना सुन नासिकेत बोले हे महाराज चित्रगुप्तजी तुम्हारी सारी पुरीको देषनेकी मेरी इछाहै और दुःखीजीव और सुखीजीवोंको इतना बचनसुन फेर चित्रगुप्तजी बोले

महावीर्य महातेजो धर्माधर्मविचारक त्वंचित्र सर्वभूतानां सर्ववेत्सि शुभाशुभं २४ वैशंपायनउवाच। एवंच तोषितस्तेनचित्रगुप्तोमहात्मवान् हर्षितोद्विजवाक्येन पुनरेवाब्रवीत् द्विजं २५ ज्ञानविज्ञानसंयुक्तं तुष्टोहंतेद्विजोत्तमं तदाभित्वांवरंशीघ्रं यत्तेमनसिवर्तते २६ नासिकेतउवाच। पश्यामिवःपुरींसर्वां दुःखानिच सुखानिच एतच्छ्रुत्वावचोभ्यश्चित्रगुप्तो वचोब्रवीत् २७ भोदूतामम वाक्येन सत्वरंद्विजपुंगवं विषमंच शुभंसर्वं दर्शयंतुपुरंमहत् २८ यथानपीड्यतेविप्रो नरकैश्चैवव्याधिभिः दर्शायित्वाचविप्रेंद्र पुनरत्रानयंतु च २९ चित्रगुप्ताज्ञयासर्वै त्वरितगामिभिस्तथा दर्शायित्वा पुरींसर्वां पृथुलांधर्मशासनात् ३०

२७ हे दूतो मेरी आज्ञासे जलदी इस श्रेष्ठ ब्राह्मणको अच्छे बुरे सब स्थान संपूर्ण नरक और धर्मात्माओंके स्थान सारा नगर दिखाकर शीघ्रमेरेपास लेआओ २८ परंतु इसको नरकोंके और रोगादिकके देखनेसे दुःख नहो किसी तरह कर २९ ऐसे वो दूत चित्रगुप्तकी आज्ञापावतेही शीघ्रगामी जलदी चलने वाले सारीपुरीको दिखावतेभए ॥ ३० ॥

और शीघ्रही चित्रगुप्तजीके पास लेआये चित्रगुप्तने धर्मराजजीके पास भेजदिया ३१ वैशंपायनजी बोले हे राजन् नासिकेत चित्रगुप्तजीको नमस्कार करके धर्मराजके समीप जातेभए धर्मराज महात्मा नासिकेत कोदेख ३२ अर्घपाद्य करके पूजतेभए और सुखसे आसनपर बैठाय पूछने लगे कि ३३ हे ब्राह्मणोंमें उत्तम तुम सुखसे आये और सब स्थान उत्तममध्यम देखे और चित्रगुप्त लेखकको देखा कुछ खेदतो नहीं पाया ३४ इतना सुन नासिकेत बोले हे महाराज तुम्हा

आनीतं पुरुषैस्तस्य चित्रगुप्तस्य वेश्मनि॥ चित्रगुप्त उवाच॥ नीयतां वै द्विजः शीघ्रं धर्मराजस्य सन्निधौ ३१ वैशंपायन उवाच॥ तं प्रणम्य गतस्तत्र यत्र वैवस्वतो यमः धर्मश्चाप्यागतं दृष्ट्वा नासिकेतं महत्तमं ३२ अर्घ्यपाद्यासनैरेनं नासिकेतमपूजयत् सुखासीनस्य विप्रस्य यमो वचनमब्रवीत् ३३ नासिकेत महाभाग ह्यागतस्त्वं सुखेन च दृष्टश्च विविधं स्थानं चित्रगुप्तं च लेखकं ३४ नासिकेत उवाच॥ त्वत्प्रसादान्मया दृष्टः स्वर्गोश्च नरकास्तथा पिता मे दुःखितो घोरे वने तिष्ठति मोहितः ३५ तस्य पादौ प्रपश्यामि स्वामिन्नाज्ञा भवेद्यदि॥ यम उवाच॥ गच्छ द्विजवरश्रेष्ठ यत्र तिष्ठति ते पिता ॥ ३६ ॥

रीकृपासे स्वर्ग और नरक सब देखा अब कुछ इच्छा बाकी नहीं है अब आज्ञा होतो मेरा पिता वनमें दुःखित होगा मेरे मोहसे ३५ जाकर उनके दर्शन करूं धर्मराज प्रसन्न हो बोले अच्छा जलदी जावो जहां तेरा पिता है बड़ी चिंतामें होगा अ

और तुम अमर हो और दुःख तुमको कोई नहीं और योगबल सदा रहे चिरंजीव रहो धर्मराजने यह वर दिया ३७ वैशंपायनजी राजा जनमेजयसे बोले कि हे राजन् ऐसे धर्मराजकी आज्ञा पायेकर दंडवत करके जिस मार्गसे गए थे उसी राहसे आवते भये ३८ एक पलमें जहां इनका पिता बैठाथा वहां आये और आनकर पिताके चरनोंमें गिरे उद्दालकमुनि महात्मा अपने पुत्रको देखतेही कंठसे लगावते भए और बारंबार प्यार करने लगे ॥ ३९ ॥

अजरश्चामरश्चैव सर्वदोषविवर्जितः भवत्वमतयोविप्र तपोयोगबलान्वितः ३७ वैशंपायनउवाच। एवमुक्तो नमस्कृत्य धर्मराजं द्विजोत्तमः गतोसौयेनमार्गेन तेनैव पुनरागतः ३८ यत्रास्थितःपितातत्र संप्राप्तो निमिषार्द्धतः उद्दालकोमहात्मानं दृष्ट्वापुत्रं समागतं इवाचतं परिष्वज्य नमंत पादयोर्मुहुः ३९ उद्दालकउवाच॥ अद्यमेसफलंजन्म अद्यमेसफलाःक्रियाः अद्यमे सफलं सर्वं यज्ञातं पुत्रदर्शनं ४० अहंक्रोधीदुराचारी निर्दयःपापकर्मकृत् बिनापराधपुत्रेतु मयाशापो नियोजितः दृष्ट्वापुत्रंसमायांतं मातातत्रोवाचहर्षितः ४२

और यह कहते भए आज मेरा जन्म सफल हुवा और आज मेरी क्रिया सफल भई आज सब सफल हुवा जो मैंने अपने पुत्रको देखा ४० हाय मैं क्रोधी हूं घोर आचार करनेवाला दयाहीन पापकर्मी जो बिना अपराध मेरी ... रीसे गएपुत्रको शाप देताभया ४१ माताभी पुत्रको देखे बड़े आनंदको प्राप्त हुई और बोलती ॥ २ ॥

बड़भागनो मेरापुत्र धर्मराजकी पुरीको गया और शीघ्रही आवता भया कैसा सुंदर मेरे पुत्रका प्रभाव है ४३ फेर उद्दालकमुनि बोले हे पुत्रकहोतो कैसें यमपुरीको गया और कैसें शीघ्रही आवता भया और कैसा यमपुरीका मार्गहै और धर्मराज कैसेहैं ४४ और कैसे तुमसे मिले और भोजन और जल कैसा मिलाथा सारा हाल वहांका मेरे आगे विस्तार सेती कहो ४५ इतना पिताका बचन सुनकर नासिकेतजी बोलने भए कि हे पिता तुम्हारी कृपासे मैं यमपुरीको गया और

पश्य पश्य प्रभावंवै मत्पुत्रस्य सुशोभनं शीघ्रंचैव यमंदृष्ट्वा आगतो यमसादनात् ४३
उद्दालकउवाच॥ कथंयमपुरींप्राप्ता कथंशीघ्रमिहागतः कीदृशोयमलोकस्य पंथा
श्चैव यमस्तथा ४४ कथंलब्धंत्वयापुत्र भोजनंपानमेवच यत्किंचित्तत्रतेदृष्टं तत्सर्वं ब्रू
हिमेसुत ४५ नासिकेतउवाच॥ त्वत्प्रसादादहंतात संप्राप्तोयमसादने देवाश्चविविधादृष्टा
यमश्चभगवान्प्रभुः ४६ चित्रगुप्तोमयादृष्टःसर्वलोकानुशासनः दृष्टश्चधर्मराजोवै स्तुति
भिस्तोषितोमया तुष्टेनमेवरोदत्तो अजरश्चामरोभव ॥ ४७ ॥

अनेक तरहके देवता देखे भगवान् षट् ऐश्वर्यवान् धर्मराज के दर्शनकिये ४६ और चित्रगुप्त महात्माको देखा सारे लोकके शुभअशुभ कर्म लिखतेहैं पहले मैंने जाकर धर्मराजजीको स्तुति करके प्रसन्नकिया उन्होंने प्रसन्न होकर वरदान मुझे दिया कि तू अमर हो और अजर हो कभी जीर्ण नहो ॥ ४७ ॥

॥ ॥ इतिश्रीनासिकेतभाषाटीकासुबोधिन्यांषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ वैशंपायनजी बोले हे राजन् जब संपूर्ण व नके ऋषियोंने सुनाकि नासिकेत पुत्र उद्दालकमुनिका यमपुरीको जाकर फिर उलटाआयाहै बड़ेआश्चर्यको प्राप्त हुवे १ और सबमिलकर उद्दालकजीके आश्रममें समाचार पूछनेको आवतेभये २ कैसे कैसे तपस्यावान ऋषिआ वतेभये सो कहतेहैं कोईतो ऐसेहैं जो पंद्रहदिनमें भोजन करनेवाले कोई जलवासी कोई नीचेको सिर ऊपरको पैर

इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेषष्ठोध्यायः ६ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥
ऋषयश्चततःश्रुत्वा सर्वेविस्मयमागताः यमस्यभवनंगत्वा मुनिपुनरिहागतं १
आगताश्चाश्रमेतस्य मुनेरुद्दालकस्यच प्रश्नार्थंचसमाधाना स्तेनोवृत्तसमन्विताः २
पक्षोपवासिनः केचित्केचिद्धैजलवासिनः अधोमुखास्तथैवान्ये वायुभक्षास्तथापरे ३
येचाग्निसाधकाश्चान्ये निराहारास्तपस्विनः ४ एकेपादेनतिष्ठंत तपस्तप्तंचदारुणं ॥
संन्यासिनोबनस्थांच मौनव्रतपरायणाः ५ ॥

करके तपस्याकरनेवाले कोई पवनकाहीभोजन करके रहनेवाले ३ कोई अग्निहोत्रकरनेवाले कोई निराहारी विना ही भोजन रहनेवाले ४ कोई एक पैरसेही खड़ेहोके तपस्या करने वाले कोई बड़ी कठिन तपस्या करनेवाले ॥ कोई संन्यासधारण करने वाले कोई वानप्रस्थ कोई विना बोल व्रतधारी ॥ ५ ॥

कोईजपयज्ञ करनेवाला बड़ा तेजवाला कोई योगाभ्यासकरनेवाला कोई ब्रह्मचारी ६ कोई सूके पत्तेखाकर हीरहनेवालाथा कोई महीनेमें एकवार भोजन करनेवालाथा ऐसे २ महात्मा ऋषिआवते भए नासिकेतसे मिलते भए ७ और पूछनेलगे हे उद्दालक मुनिके पुत्र जो तुमने देखाहै परलोकमें उसकी कथा सारी वर्णनकरो ८ कैसाहै यमलोक और उसका मार्ग कैसा है सो कहो ९ और यमके दूत कैसे हैं और उन

जपयज्ञरताः केचि दृषयः चोग्रतेजसः योगाभ्यासरताः केचित् तापसा ब्रह्मचारिणः ६ शुष्कपर्णाशनाः केचित्तथा मासोपवासिनः एवं ऋषिर्मिलिताः सर्वे नासिकेतं महामुनिं उद्दालकात्मजं प्राज्ञ हृष्टं चैव वचयाद्भुतं ८ नासिकेत महाभाग परलोककथां वद कीदृशो यमलोकश्च तस्य मार्गस्य कीदृशः ९ कीदृशा यमदूताश्च का स्थितिर्वर्तते द्विज कीदृशास्तत्र लोकश्च क्रोधी वा प्रियवाग्द्विजः १० कीदृशा नरकास्तत्र केन पापेन को भवेत् सत्यं ब्रूहि महाप्राज्ञ ऋषयः प्रष्टुमागताः ॥ ११ ॥ नासिकेत उवाच ॥

का चलन वा रूप कैसाहै और मनुष्य कैसे हैं क्रोधीहैं वा प्यारे मीठे बोलने वाले हैं १० और नरक कैसे हैं और कौन पापसे क्या गति होती है सो सब सत्य सत्य कहो हम सब ऋषि तुमसे पूछनेके लिये आए हैं ॥ ११ ऐसे ऋषियोंके बचनको सुनकर नासिकेतजी बोलते भए ॥

सबको नमस्कार करके और महादेव धर्मराजको यथायोग्य नमस्कार कर बोले हे ऋषिश्वरो सुनों जो मैंने देखा रोमोंके खड़ाकरने वाला चरित्र है १२ पिताके शापसे मैं यमपुरीको प्राप्तहुवा तहां जाय जमराजको स्तुति करके प्रसन्नकिया १३ प्रसन्नहुवे पीछे पुरी दिखावनेकी हुतोंको आज्ञादेते भये सो हूत आज्ञापाकर देखावतेभये १४ सब जीवोंके शुभ असुभ कर्मको विचारते हुवे चित्रगुप्तको देखता भया फेर मैंने उनसे अजर -

अथ नाम्रषयः सर्वे येचान्ये तपसिस्थिताः नमस्कृत्य महादेवं धर्मराजं महामतिं तत्रहष्टं प्रवक्ष्यामि महान्तं रोमहर्षणं ११ पितुः शापादहं प्राप्तो विप्राः संयमनीं पुरीं तत्रहष्टोधर्मराज स्तुतिभिस्तोषितोमया १३ तुष्टंधर्ममयाप्रोक्तं दर्शयस्व पुरीं मम तदायमाज्ञया सर्वापुरीहष्टा मयाद्विजाः १४ चित्रगुप्तोमयाहष्टः शुभाशुभविचारकः ततोवरंमयालब्धंविनयाविष्टचेतसा अजरतामरताच व्याधिदुःखविनाशनं १५ आगतोहं पुनश्चैवपितुर्मम प्रसादतः पुनश्चाहंप्रवक्ष्यामि यमलोकस्य विस्तरं १६ शतानिदशविस्तीर्णं योजनानां प्रमाणतः चतुरस्रं चतुर्द्वारं नानारत्नोपशोभितं ॥ १७ ॥

अमर वर पाया व्याधदुःखके नाशकरनेवाला १५ फेर मैंने आपकी कृपासे पिताकाध्यान दर्शन किया अबमैं अब यम लोकका विस्तार करताहूं सो सुनो १६ एक हजार योजन प्रमाण लंबाहै चारकोसका एक योजन कहाहताहै वो और चार द्वारहैं अनेक रत्नो करके शोभावान है ॥ १७ ॥

धर्मराजका दिव्यपुर है और सात उसकी सफील हैं १८
अनेक तरह के मनुष्यों से भरा है और बड़े गाने बजाने करके संयुक्त है और सूर्यके समान चमकता है
तिस नगरके बीचमें धर्मराज का मंदिर कैसा बना हुवा है सारा रत्नों करके जड़ा हुवा है अग्नि और
१९ चित्री हुई बिल्लौर की पोरीयां हैं हीरियों का ... रस बना है तहां धर्मराज जी अनमोल ऊंचे सिंहासन पर बैठे राज
मान हैं २० और बड़े २ महानुभाव श्रेष्ठों में श्रेष्ठ ऐसे धर्मराजजी और सतपुरुष और बड़े २ योगीजन सभामें धर्मराजके

तस्याम
नानाजनसमाकीर्णं गीतवादित्रसंयुतं धर्मराजपुरं दिव्यं सप्तप्राकारवेष्टितं १८
ध्ये महादिव्यं धर्मराजस्य मंदिरं सर्वरत्नमयं वह्नि विद्युज्ज्वालार्कवर्चसं १९ चित्रस्फाटि
कसोपानं वज्रकुट्टिमशोभितं तत्रासौ भगवान् धर्म आसनेऽनुपमे शुभे २० उपविष्टः स
भाश्रेष्ठः सिंहासनगतो यमः सभायां धर्मराजानं योगिनः समुपासते २१ अप्सरो गणगंध
र्वा विद्याधरमहोरगाः प्रविशंती द्वारि द्वारि शिवभक्तिपरायणाः २२ ग्रीष्मे ... प्रदातारो
माघे वह्निप्रदायकाः विश्रामयंती ये श्रांतान् विप्रान् अध्वर पीडितान् ॥ २३ ॥

पास बैठे हैं २१ और रंभासे आदि लेकर स्वर्ग की वेश्या नृत्य करती हैं और गंधर्व विद्याधर ... गान करते हैं ॥
बड़ा आनंद होरहा है मैंने देखा और जो शिवजीकी भक्ति करके पूजा करते हैं सो नगरी के ... द्वार होकर जाते हैं
२२ और जो मनुष्य वैशाख ज्येष्ठ के महीने में शीतलजल और शीतकाल पोह माघमें अग्नि ... करते हैं अर्थात्
जो गरीब पालेमें मरता हो उसे सिकावें जो थके मुसाफिर को विश्राम दें और ब्राह्मण पीड़ित को टिकाना ॥ २३ ॥

श्रोरदानधर्मके विषें जिनकी प्रीति है क्रोधलोभ करकेजो रहितहैं माता पिताकी जिनको भक्तिहै गुरोंकी ब्रह्मणोंकी पू
जा श्रोर सत्कार करनेमें जिनकी सदैव प्रीतिहै २४ ऐसें २ सब मनुष्य पूर्वदिशाके द्वारकोजातेहैं श्रोर जो मनुष्य घर
पर आयेहुवे अतिथिका मानकरतेहैं श्रोर देवता ब्राह्मणोंको पूजतेहैं २५ श्रोर जो पुष्करसे आदिले तीर्थ श्रोर गंगाजीसे
आदिले महानदी इनमें जोस्नान करतेहैं श्रोर साक्षात् मुक्तिके देनेवाली श्रीकाशीजी अथवा गोशालामें जो मरतेहैं वे

दानधर्मरताश्चैव क्रोधलोभविवर्जिताः पितृभक्तिरतायेच गुरुपूजारताः सदा २४ ते
सर्वे पूर्वद्वारेण प्रविशंतिद्विजोत्तमाः अतिथीन्पूजयेयुर्ये देवद्विजप्रपूजकाः २५ ब्राह्म
णानांचयेभक्ताः तीर्थस्नानरताश्चये वाराणस्यांगोगृहे च मृतास्तेयांतिचोत्तरे २६
सत्यव्रतधरायेच नित्यंधर्मपरायणाः परद्रव्येच्छाविहीनाः परनिंदा पराङ्मुखाः २७
विष्णुभक्तामहात्मानः परस्त्रीषु नपुंसकाः नित्यंधर्मकथासक्ताः परहिंसाविवर्जिताः २८
एतेवैपश्चिमेद्वारे प्रविशंतिसुखान्विताः २९ ॥

मनुष्य उत्तर दिशाके द्वारको जातेहैं २६ श्रोर जो मनुष्य सत्यव्रतको धारण करतेहैं नित्य धर्म करने वाले हैं
पराये धनकी इच्छानहीं करते पराई निंदानहीं करते २७ श्रोरजो मनुष्य विष्णुभगवानके भक्तहैं जो महात्मा
साधुब्राह्मणोंके भक्तहैं पराई स्त्रीसे भोगादिक नहीं करते श्रोर नित्यधर्म कथा सुननेमें जिनको प्रेमहै श्रोर कीड़ी
कीहिंसानहीं करते रक्षाकरतेहैं दयावानहैं २८ ये सब पश्चिमदिशाकेद्वारको बड़े सुखकरके आनंदसे जातेहैं ॥ २९ ॥

और जो दक्षिण दिशाको आते हैं सो सुनो जो मनुष्योंमें नीच हैं कैसे झूठ बोलनेवाले और गुरु देवता ब्राह्मण इनको झूठा दोष लगावने वाले माता पिताकी आज्ञा नहीं माननेवाले पुराण वेद शास्त्र मीमांसा इनकी निंदा करने वाले ॥ ३० बड़ा हाहाकार शब्द करते हुए पुकारते मैंने देखे और उस द्वारमें बड़ा अंधेरा होरहा है और अनेक तरहके रोग पीछे लिपटते हैं ३१ ऐसे पापकर्मियोंको वहां ऊपरसे यमके दूत पीडा देते हैं मुदगरोंकी मार करते हैं ॥

अन्ये च दक्षिणे द्वारे प्रविशन्ति नराधमाः सदानृतपराः क्रूरा गुरुदेवद्विजद्वेषिकाः पुराण वेदमीमांसामातापित्रोर्विनिंदकाः ३० हाहाकारो भवत्युग्रस्तस्मिन्द्वारे मया श्रुतः अंधकारमयं घोरं नानारोगनिषेवितं ३१ तत्रैव पापकर्माणो यमदूतैः प्रपीडिताः मुद्गरैस्ताड्य मानाश्च लोहदंडैश्च दारुणैः ३२॥ ॥ इतिश्री नासिकेतोपाख्याने सप्तमोऽध्यायः ॥ ७

नासिकेत उवाच ॥ तत्रैव नरका दृष्टा नानापीडामया द्विज कुंभीपाकमुखा घोरा घोरेस्या ह्येक विंशतिः १ तानहं संप्रवक्ष्यामि शृणुध्वं द्विजसत्तमाः वदमानोपि नरकान् भयभीतो भवाम्यहं २

लोहके दंडोंकी मार देते हैं बड़ा भय भयभीत दारुण द्वार है ३२ ॥ ॥ इतिश्री नासिकेत भाषा टीका सुबोधिन्यां नाम सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ नासिकेतजी फेर कहते भये हे ऋषियो हार मैंने अनेक तरहकी पीडा देनेवाले नरक देखे सो सुनो कुंभीपाक नाम नरकसे आदि लेकर इक्कीस प्रकार के हैं १ जिनको अब मैं कहता हूं सुनो कहते हुवे भी इन नर्कोंके मैं भयकर्के डरता हूं हे ब्राह्मणों ॥ २ ॥ ॥

इक्कीस प्रकारके नरक कहते हैं कुंभीपाक॰ अवीची॰ महारौरव॰ रौरव॰ कालभेद॰ महाघोर॰ दारुण॰ रोमहर्षण॰ तपन॰ बड़ाघोर है। निश्वास॰ महत्‌ऽद्भुत॰ तप्तांगार॰ तप्तभूमि॰ असिपत्र॰ ३ पाककी भरी नदी॰ कीड़ोंका भराकुआ॰ विष्टेका भराकुआ॰ कर्णनासिका विकर्तन॰ जिससे नाक कान कट जाये॰ ४ घृतपाक॰ गुड़पाक॰ संतप्तबालुक॰ तपाहुआ बालुका दुर वर्धक॰ ५ पर्वतारोहण॰ शूलारोपण॰ तपी संडासीसे नेत्र उखाड़ना ६ तहां इन नरकोंमें मैंने ब्रह्महत्या करने वाले और

कालभेदो महाघोरो दारुणो लोमहर्षणः तपनश्च महाघोरो अनिश्वासो महद्भुतः तप्तां गारस्तप्तभूमि रसिपत्र वनं तथा ३ पूयपूर्णं नदीचैव कूपश्च कृमिपूरितः विष्ठापूर्णास्त थाकूपः कर्णनासाविकर्तनं ४ घृतपाकस्तथाचैव गुड़पाकस्तथैवच संतप्तबालुक श्चैव तथैव दुरवर्धकः ५ पर्वतारोहणंचैव शूलारोहणमेवच तप्तसंदंशकापेण नेत्रो त्पाटनमेवच ६ ब्रह्मघ्नास्तत्र मे दृष्टा गोघ्नाश्च पितृघातकाः मित्रविश्वासमुद्धंतियेचगर्भनि पातिनः ७ स्त्रीणांदोषरहीनाच तथैवगुरुतल्पगाः परनारीरतायेच परद्रव्याभिलाषिणः ८

गोहत्या करनेवाले॰ माता पिताके मारनेवाले॰ विश्वास देके मित्रको मारनेवाले गर्भगिरावनेवाले ७ और पतीव्रता स्त्रीको दोष लगावनेवाले॰ गुरोंकी स्त्रीसे गमन करनेवाले॰ पराई स्त्रीसे प्रीति करने वाले॰ पराये धनकी इच्छा करने वाले अर्थात्‌ चुरावने वाले ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

गौ ब्राह्मणको बिना अपराध त्यागने वाले· बिना अपराध स्त्रीको त्यागने वाले· जो पराए दुःखमें सुख पानेवाले·
और पराए आनंदमें दुःख पानेवाले· पाप कर्म नित्य करनेवाले· सत्य न बोलनेवाले· सदा अपवित्र रहनेवाले· चु
गली नित्य करनेवाले· चोरीकी जीवका से पेट भरनेवाले· ११ धरती और घर हरणेवाले· १२ दयाहीन· दान धर्म क
रके रहित· बड़े पाप करके युक्त· जो झूठ बोलनेकी आजीवका करतेहैं १३ गुरूका बचन तथा शास्त्रकी

गोब्राह्मण परित्यागी साधुवृत्ताः स्त्रियस्तथा त्यजंति दूषका राज्ञां परधर्मस्य निंदकाः
९ कूटसाक्षीप्रदातारः क्रूरकर्मरताश्चये दुःखिते हर्षकारीच सुखिते दुःखितः सदा १०
पापेषु रमते नित्यं सत्यशौचविवर्जितः सूचकः कलुषो नित्यं चौर्येणैवोपजीवति ११
भूहर्तागृहहर्ता च देवद्रव्यापहारकः १२ दयाहीना दुराचारा दानधर्मविवर्जिताः महा
पापेन संयुक्ता स्तथाये बकवृत्तयः १३ नश्रुतंच गुरोर्वाक्यं शास्त्रवार्तातथैवच पुराणसंभ
वं वाक्यं येनयेन कदाचनः १४ महाक्लेशकराश्चैव निजधर्मविवर्जिताः एते चान्ये च वा

र्ता वा पुराणका बचन जो कभी नहीं सुनने १४ नित्य कलेश करनेवाले· धर्मरहित ऐसे अनेक जीव ॥

ना॰
टी॰
५१

पापकर्मी है ऋषियो मैंने उन नरकोंमें पचते दुखी होते हाय हाय करते देखता भया ॥ १५ ॥ ॥ इतिश्रीनासिके
तभाषाटीकासहितोऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ फिर नासिकेतजी बोले कि मर्त्यलोकमें पापी मनुष्य पापका व्यव-
हार करनेवाले देहत्यागने के उपरांत पिंडका देह पायकर १ यमदूतों करके खेंचे हुवे जैसे बंदरको रस्सी बांध
कर लेजाते हैं जैसेही यमराजके पास प्राप्त किया जाता है ॥ २ ॥ जो धर्मराजकी सभामें बडे २ महात्मा ऋषि

वहवो मया दृष्टा ह्यनेकशः नरकेषु च सर्वेषु पच्यमानाः स्वदुःष्कृतैः ॥ १५ ॥ ॥ इतिश्री
नासिकेतोपाख्यानेऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ नासिकेत उवाच ॥ मर्त्यलोकेषु पापिष्ठाः पा
पाचाररता नराः देहं त्यक्त्वा पुनर्लब्ध्वा यातनादेहमित्युत १ दूतैः कृष्टाः पुरीं यांति रज्जु
हीना इव मर्कटाः वैवस्वतस्य भो विप्राः सभायां संस्थितस्य च २ सभामध्ये स्थिता ये तु तान्शृणुध्वं
द्विजोत्तमाः कृष्णद्वैपायनः शृंगी भरद्वाजो महामुनिः ३ दुर्वासा गौतमश्चैव मरीचिर्भृगुरे
व च पिप्पलादः पुलस्त्यश्च पुलहः सनकस्तथा ४ सुरभिः सुरदेवश्च वाल्मीकिश्च महातपाः ५

विद्वान् विराजमान हैं सो सुनो हे ऋषियो कृष्णव्यासजी॰ शृंगीऋषि॰ भरद्वाज॰ मुनि हैं ३ दुर्वासाजी॰ गौतमजी म
हाराज॰ मरीचि॰ भृगु॰ पिप्पलाद॰ पुलस्त्यजी॰ पुलह॰ सनक॰ सनंदनादि ब्रह्माके पुत्र ४ सुरभिनाम ऋषि॰
सुरदेवऋषि॰ वालमीकजी॰ कैसे हैं बडे तपस्यावान् ॥ ॥ ५

और विश्वामित्रजी॰ वसिष्ठजी महाराज॰ क्रतुनाम॰ हरिनाम ५ ये और भी बहुतसे महात्मा विप्र ऋषि मैंने विराजमान देखे धर्म अधर्मके विचारने वाले देखता भया वेदके विचारनेवाले धर्मशास्त्र नीतिशास्त्रके विचा नेवाले संदेहके दूरकर्नेवाले ६ निर्णय करके मनुष्योंका पापपुण्य यमकी आज्ञापाय इत दंड देते हैं जैसा जिसका कर्म है ७ ब्रह्महत्या करने वाले मनुष्य कुंभीपाक नरकमें डालकर पकाये जाते हैं और जो गौ हत्यारे हैं और

विश्वामित्रोवसिष्ठश्च क्रतुर्दत्तोहरिस्तथा ५ एते चान्ये च बहवो मयादृष्टास्त्वनेकशः
यमेन सहिताः सर्वे धर्माधर्मविचारणां कुर्वंति सततं विप्रा वेदज्ञाः संशयच्छिदः ६ निर्णीयपा
पिनां पापं दंड्यंते हि यमानुगैः ७ ब्राह्मणघ्नश्चयः पापः कुंभीपाके सपच्यते गोघ्नाश्च वृकृतघ्ना
श्च येच स्त्रीगर्भपातिनः तैलयंत्रेण पीड्यंते यमदूतैर्भयंकरैः ८ स्वामिद्रोहरता ये च गुरुद्रो
हकराश्च ये विश्वासघातकाये च छिद्यंते क्रकचैर्द्विधा गरदा ये च जंतूनां पच्यंते ह्यनलेषु
च ९ देवद्वृत्तिहरायेच्च परदाररताश्च ये गुडपाकेषु पच्यंते ये जीवानां विहिंसकाः १०

कृतघ्नी हैं स्त्रीयोंके गर्भगिराने वाले हैं तैलयंत्रनाम कोल्हूमें पीरे जाते हैं यमदूतों करके ८ जो अपने स्वामीसे वा गुरु से द्रोह कर्ते हैं जो मनुष्य विश्वास देके घात करनेवाले हैं वो आरेसे चीर कर दो टूक किये जाते हैं और जो जहर किसी जीवको देते हैं सो अग्निमें पकाये जाते हैं भूने जाते हैं ९ और जो मनुष्य देव अथवा विप्र कोई जीविका की व कदेकर उलटा छीन लेते हैं और पराई स्त्रीसे गमन कर्नेवाले॰ जो जीव हिंसा कर्ते हैं सो गुड़की प्रानमें पकाये जाते हैं १०

परायेधनकेलेनेमें आठपहर जिनका ध्यान रहताहै मनसेभी जो किसीका बुराविचारते हैं वा करते हैं· झूठविचारते हैं यह तीनप्रकारका मानसी विचार कहाहै ११ कठोर बोलना· झूठबोलना· चुगलखोरी· अनर्थक बचन यह चारतरहका बाणीरूप विचार कहाहै १२ विनादियेका लेना· विना बिधान हिंसा करनी १३ पराई स्त्रीसे गमनकरना यह शारीरक देहीका विचार कहाहै ऐसे दसतरहका पाप मनुजीने कहाहै जो मनुष्य इनपापोंको करते हैं सो कालसूत्र घोर नरकहै उसमें पकाये जाते हैं ॥ १४ जो अभक्ष नहीं भोजन करनेकी चीजको भोजन करते हैं और जो मदिरा पान करते हैं· और जो जिसे गमन नहिं करना उसे गमन करते हैं· और जो गुरोंकी निंदाकरने वाले ऐसे पापी मनुष्य १५ यमपुरीमें दूतों करके पीडा पावते हैं अनेक नरकोंमें १६ और जो मनुष्य जंडी बोड़ पीपल· पालाश इन दृक्षोंको काटते हैं तथाही वो धर्मलोकमें छेदन पीडा दूतों करके पावते हैं ॥ १७ ॥

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिंतनं वितथाभिनिवेशश्च मानसंत्रिविधंस्मृतं ११ पारुष्यमनृतंचैव पैशून्यं चापि सर्वशः असंबंधप्रलापश्च वाङ्मयंस्याच्चतुर्विधं १२ अदत्तानामुपादानं हिंसाचैवाविधानतः १३ दारोपसेवा च कायिकं त्रिविधंस्मृतं एवंपापंदशविधं मनुनोक्तं करोतियः पच्यते नरके घोरे कालसूत्रे सनुद्विजाः १४ अभक्ष्यंभक्षयेद्यस्तु मदिरांपिवतेचयः अगम्यागमनंचैव गुरुनिंदारतोनरः १५ एतेवैपापिनः सर्वे दृष्ट्वा वैवस्वतेपुरे यातनाभिः पच्यमाना नारकीभिरनेकधा १६ शमीन्यग्रोधपालाशछेदनंकुरुतेतथा तस्यदूता धर्मलोके छेदपीडां प्रवर्त्तते ॥ १७ ॥

॥ ॥ ॥

जो बलवैश्य देव करे पीछे भूखा अतिथ आवै उसका जो निरादर करेहैं खोटी बुद्धिवाले १८ सो उसके दोनों नेत्र मूंदे
जातेहैं झानी पर पैर धरके १९ जो सदा पाप करेहैं रौरव नाम नरकमें गेरे जातेहैं ॥ २० ॥ जो ब्राह्मण बिना नौते
जीमने जाताहै वा बिना बलवैश्य किये भोजन करताहै उनका नीचेको मुख करके विष्टाके कूपमें पड़ते मैंने दे
खा २१ जो मनुष्य धर्मशास्त्रको दोष लगातेहैं अथवा तीर्थकी निंदा करें वा कठोर बचन बोलने वाले अथवा

अतिथिन् वैश्वदेवांते स्वागतान् क्षुधयातुरान् वीक्षंते क्रूरदृग्भिर्ये पापात्मानोल्पबुद्धि
यः १८ तेषामुद्धियतेंनेत्र युग्मं दत्वा पदं हृदि १९ सदापापरतायेतु क्षिप्यंते रौरवे ध्रुवं २०
येतु निर्मंत्र भोक्तारो वैश्वदेव विवर्जिताः विष्टाकूपेषु पतिता मयादृष्टा अधोमुखाः २१
दूषयेद्धर्मशास्त्राणि तीर्थे निंदां करोतियः आत्मसंभावितः स्तब्धः शिलापृष्टेषु पिष्य
ति २२ एतेवै पापिनो दृष्टा यमलोके शाहस्रशः ॥ २२ ॥ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्याने
पापितयातनावर्णनंनाम नवमोध्यायः ॥ ९ ॥ नासिकेत उवाच ॥ अतः परं मयादृ
ष्टं महतो रोमहर्षणं अद्भुतं नु शृणुध्वं से मुनयो येसमागता ॥ १ ॥

अहंकारी जो अपने को बड़ा समझ औरका तिरस्कार करतेहैं उनपै सिला फेरके पीस दिये जातेहैं ऐसे जमपु
रीमें हजारों देखता भया २२ ॥ ॥ इति नासिकेत भाषाटीकायां नवमोध्यायः ९ नासिकेतजी फिर कहने लगे
कि इससे परे और मैंने देखा बड़ा रोमांचके उठावने वाला अचंभा हे मुनीश्वरो सुनो ॥ १ ॥

नरक देखे अग्निजैसे जलतेहुवे पापी जहां जलायें जातेहैं यमदूतोंकरके २ सो कैसे दूतहैं ऊपर को जिनके केश बड़ी काया· नीषी दाढ़ भयके देनेवालेहैं मुख जिनका लपलपाताहुवा बड़े बड़े नख सूई कासामुख ३ पापीयों। को त्रास देनेवाले दूरतक देखने वाले जिनके नेत्र और दूरतक सुननेवाले जिनके कान और बड़े बलवाले दूत पापीयोंके वाल पकड़कर बड़ी पीड़ा देतेहैं ॥ ४ ॥ जो विशयी मनुष्य हैं तिनको क्षणमात्रका तो सुखहै और

नरकाश्चमयादृष्टाज्वलदग्निसमप्रभा पापिनोयत्रदह्यंते यमदूतैरनेकधा २ ऊर्द्धके

शामहाकाया नीक्ष्णदंष्ट्राभयंकराः वक्रतीक्ष्णनखाग्राश्च सूचीवक्राभयंकराः ३ त्रास

काःसर्वपापानां दूरदर्शनचक्षुषः दूरश्रवणविज्ञाना दीर्घकाया महाबलाः ४ केशाग्र

हणपापिष्टान् संगृह्यव्यथयंतिच विषयासक्तमनसां सुखंचक्षणमेवहि भवेद्दुःख

चकल्पांतं तप्तस्थर्मिमयंद्विजाः ५ येनयद्यत्कृतंकर्म सतद्भुंक्तेशुभाशुभं ६ एवंतत्र

मयादृष्टा पीडाकर्मसमुद्भवाः हन्यमाना नीयमाना मयादृष्टाह्यनेकशः ॥ ७॥

प्रलय तक दुःखही दुःख भोगना पड़ताहै ५ जिसने जोजो कर्म कियेहैं सोई सोई शुभअशुभ फलको भोगता है ६ ऐसें तहां पीड़ाको प्राप्त हुवे पापीजन मारखाते और पिटते हुवे मैंने देखे ॥ ७ ॥

यमकिंकर असिपत्र बनमें लेजाके ताड़ना करते हैं जो मनुष्य झूठी गवाही· झूठकर्म करने वालेंको घोर नरकमें कु
हाड़े से शिर तोड़ कर गेरदेते हैं जो जीवोंका घात करनेवाले हैं जो जीवोंको दुःखदेनेवाले हैं व्याधि कष्टकरके पीड़ा किये ग
ये हैं ९ घीकी चोरी करनेवाला तपेहुवे घीके कड़ाहे में गेरेजाते हैं· तेलचुरावनेवाले तपेहुवे तेलमें गिराये जा
ते हैं· दूधका चोर तपेहुवे दूधमें गेरेजाते हैं· देवताओंके हजार वर्ष तक गेरेजाते हैं ॥ १० ॥ देव पूजनमें

तत्रवैकेधर्मैहते रसिपत्रेश्च ताडिताः कूटसाक्षिप्रदातारो कूटकर्मरताश्चये ८ नीयं
ते नरकेघोरे शिरश्छित्वा कुठारकैः प्राणिनांघातकाश्चैव पीडिता यमकिंकरैः दुःख
दाः प्राणिनांयेतु व्याधिकष्टेन पीडिताः ९ घृतचौरो घृतेक्षिप्त स्तैले तैलापहारकः
दुग्धचौरोभवेदुग्धे दिव्यवर्षसहस्रकं १० देवतार्चन सेवायां भक्तिभावविवर्जिताः
दुष्टकर्मरतायेतु पाशैर्बद्धाः कदर्थिनः ११ वाटिकाछेदितायेन देवप्रासादभंजकः क्र
तंकर्म हृतंयेन परान्नं द्विजपुंगवाः किंकरैर्बध्यमानास्ते रुदंतिकरुणां बहु ॥ १२ ॥

भक्तिरहित जो मनुष्य खोटेकर्ममें जिनको प्रीतिहै ऐसे कंदर्ज मनुष्य फांसीयों करके बांधेजाते हैं ११ बाग ब
गीची काटने वाले· देव मंदिर तोड़ने वाले· पराये अन्नको चुराने वाले· जो मनुष्य हैं हे ऋषियों किंकरों करके
बांधेहुवे करुणाके बचन कह कह वार २ हजारों रोवने देखना भया ॥ १२ ॥ ॥ ॥

जोमनुष्य जीवोंपर दया नहीं करते कठोर क्रूर जिनका मनहै जबतक सूर्य चंद्रमा हैं तबतक नरक मे पीड़ा पावते हैं १३ मारगके वृक्षोंको जो काटतेहैं और जो मार्गमें कांटे खलेरतेहैं इनको यमदूत वज्रों करके ताड़ना करतेहैं १४ जो मनुष्य भोजनमें जहर देतेहैं उनके मुखमें जमके दूत लोहा तता करके देतेहैं १५ जो स्त्री अपने पुरुष को त्यागके पराए पुरुष के साथ जो प्रीत करती है उन अभागियोंको यमके दूत मुदगरों से

सर्वजीव दया हीना निष्ठुराः क्रूरमानसाः नरके पीडिता दूतै र्यावच्चंद्रदिवाकरौ १३
मार्गेषुच्छेदिता वृक्षा विकीर्णाः कंटकाः पथि भवेत्तेषां वधो दूतै र्वज्रदंडैश्च ताडनं १४
भोजनं विषसंयुक्तं योदद्यात्प्राणिनां यदि तप्तलोहं मुखे तस्य दीयते यमकिंकरैः १५
पतिं संत्यज्य यानारी परपुंसिरता भवेत् तां नारीं निरये दुष्टां ताडितां भीममुद्गरैः १६
रुरौदीयते दुःखं यमदूतै र्भयंकरैः अत्युद्दाग्निसंपूर्णे न लोहस्तंभे प्रतापन १७ अगम्या
गमनं येन कृतं वै पापकारिणा स्वगोत्रां मनसा यातो यमलोके सुदुःखभाक् १८

ताड़ना करतेहैं १६ और दारुणा जो लोहेके स्थंभ तिनसे तपावेंहैं १७ अगम्या स्त्रीसे जो गमन करतेहैं पापी मनुष्य अपने गोत्रवाली से गमन करते हैं सो मनुष्य बड़े दुःखको भोगते हैं ॥ १८ ॥

जो मनुष्य अपने दोषको छिपावैं और पराये दोषको प्रकाश करैं और पराय कामको जो विगाड़े वे मनुष्य अंधकूपमें गेरेजातेहैं १९ जो मनुष्य शास्त्रको और देवता ब्राह्मण गुरु इनको जो दोष लगावैहैं उनकी जीभ काटी जातीहै ऐसें अनेक मैं देखता भया २० जो मनुष्य रत्नोंको चुराता है अथवा सोना गुलीबंद चांदी हीरा इनको जो चुरातेहैं सो कुंभीपाक नाम नरकमें पड़ते देखता भया २१ जो मनुष्य बालक को और वृद्धको बिना दिये अकेले

नैव पश्यति दोषंस्व परदोषं प्रकाशयेत् । पच्यतेह्यंधकूपेस परकार्यविभेदकः १९
दूषयेत्सर्वशास्त्राणि देवतं ब्राह्मणं गुरुं जिह्वाछेदो भवेत्तस्य मया दृष्टोह्यनेकधा २०
येहरेद्रत्नवस्तूनि सुवर्णाभरणानि च प्रवाल वज्र हर्तारो कुंभीपाके स पच्यते २१ ए
कांते मिष्टमश्नाति बालकं वंचयन्खलः स्वमांसं भक्ष्यमाणाः स मया दृष्टो द्विजोत्तमाः
२२ एते पापा मया दृष्टा यमलोके नराधमाः २३ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्याने छ
नकर्म वर्णनंनाम दशमोध्यायः ॥ १० ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥

ही मिठाई खाते हैं उनको अपना मांस आ खाते हुवे मैं देखता भया २२ इस प्रकार मैने यमपुरी मेंको है ऋषि देखा सो तुमसे वर्णन करताभया २३ ॥ ॥ इति नासिकेतभाषाटीका सुबोधिन्यां दशमोध्यायः ॥ १० ॥

फेर नासिकेत बोले हे ऋषियो इससे पर और जो मैंने देखाहै सो कहताहूं सुनो जो मनुष्य बालकवा वृद्ध वा अपने स्वामीवा लंगड़ा अपाहज वा ब्राह्मण अथवा कन्या इनसे पहले जो आप गृहस्थी घरका मालिक भोजन करे अथवा पतिसे पहले जो स्त्री भोजन करे १ ये शालके वृक्षमें कैसा वो शालका वृक्ष जलते अग्नि के समान उसमें लटकते हुवे अनगिनत देखताभया २ उस वृक्षका पांच योजन का तो विस्तार और दश योजन ऊं

अतः परं मयादृष्टं शृणुध्वं कथयाम्यहं बालकं स्वामिनं पंगुं वृद्धं विप्रं च कन्यकां त्यक्त्वा
भुनक्ति पूर्वं यो भर्तारं च पतिव्रता १ घने शालमलीवृक्षस्था मयादृष्टाह्यनेकशः मनुष्य वृ
क्षो मयादृष्टो ज्वलदग्निसमप्रभः २ पंचयोजनविस्तीर्णो दशयोजनमुच्छ्रितः तास्मि
न्बद्धाः पापिनस्ते ताड्यन्ते यमकिंकरैः ३ नाडिताः वज्रदंडैश्च मुद्गरैर्भिन्नमस्तकाः ४ पु
नस्तत्र मया दृष्टो नरकस्तप्तबालुकः प्रज्वलद्वह्निसदृशो दह्यंते तत्र पापिनः ५
तृष्णया तत्र पीड्यंते बद्धहस्ता नतो नराः ६॥

चा है तिसमें जमके दूत संगलों से बांधकर ताडना करते हैं सो देखता भया ३ वज्रों और मुद्गरों करके पापियों के माथे टूटजाते हैं ४ उसके सिवाय फेर मैंने देखा तप्तबालुक नाम नर्कहै जिसका रेता भाड़ के बालू से अधिक तपाहुवा पापीजन उसमें गेरते ही भुन जातेहैं सोभी देखा ५ और भूख प्यास बहुत लगती है और हाथ पैर बंधे होवें

जो मनुष्य अपघात करेहैं सत्य धर्म करके हीनहैं उनको तप्तबालक नरकमें पड़ते देखना भया ७ जो मनुष्य अपने धर्मको छोड़ पराये धर्मको अंगीकार करतेहैं और जिनोंने अन्नका और जलका दान नहीं किया ८ और जिनोंने ब्राह्मनोंको मिष्टान्नसे तृप्त नहीं किया वा अग्निमें कभी हवन नही किया और गृहस्थी होकर जिनोंने पंचयज्ञ नही किया ९ उसी नरकमें मैंने पड़तेदेखे फेर जन्मधारके कीड़ोंकी योनिमें जातेहैं अपने कर्मकर्के

आत्मघातंप्रकुर्वंति सत्यधर्मविवर्जिताः तास्मिँल्लोके मयादृष्टाः पतितास्तप्तबालुके ७ स्वधर्मंचपरित्यज्य परधर्मरतानराः नकृतंजलदानंवै ह्यन्नदानंचनोकृतं ८ नतोषितो विप्रगणास्तथानाग्निमुखेहुतं गृहेस्थितायेपुरुषाः पंचयज्ञविवर्जिताः ९ तास्मिन्‌-स्थाने मयादृष्टं पुनर्देहांतरंभवेत् कृमियोनिषुजायंते नराःस्वेनैवकर्मणा १० कूटसाक्षंवदेयस्तुकूटमानंकरोतियः सोमुत्रस्वकृतेनैव दह्यते वायुवह्निना ११ विप्रांश्चदेवतांश्चैव गंगादिसरितस्तथा नमन्यते नरोयस्तु नरके पीड्यतेभृशं ॥ १२ ॥

१० झूठी गवाही देनेवाले· झूठामान कर्नेवाले· इस लोकमें और परलोकमेंभी दुःखको पावतेहैं ११ ब्राह्मण और देवता और श्रीगंगाजी से आदिलेकर नदियां हैं जो मनुष्य इनको अहंकारसे नहीं मानते अति पीड़ाको प्राप्त होते तिनको देखा ॥ १२ ॥

जो मनुष्य निर्दयी हैं जीवहिंसा करने वाले हैं सोभी जमदूतों कर्के बड़ी पीडाको पावने हैं १३ माता और बहन· बेटी गुरू वा बालक· पुत्र जो मनुष्य इनका निरादर मानभंग करते हैं सोभी बड़ी पीड़ाको पावते हैं १४ सो हे ऋषियो मैंने ऐसा कुतूहल देखा कि दंड हाथमें लिये मुद्गर लिये बांधते मारने दूतोंको देखा १५ ॥ ॥ इतिनासिकेतभाषाटीकासुबोधिन्या नाना नरक वर्णन नामैकादशोध्यायः ११ नासिकेत फेर बोले हे ब्राह्मणो इसके पीछे

निर्दयामानमारूढा जीवहिंसापरायणाः तेमुत्रनियतंघोरैः पीड्यंतेयमकिंकरैः १३
मातृस्वसुः सुतांचैवगुरोःपुत्रान्नराधमाः भ्रांत्वेन नमन्यंते पीड्यंतेसुत्रते भृशं १४ दंड
हस्तैर्महाघोरै बंधबंधादिभिस्तथा एतत्सर्वमयादृष्टं द्विजाः कौतूहलंमहत् १५ ॥ ॥
इतिश्रीनासिकेतोपाख्याने नरकवर्णनं नामैकादशोध्यायः ११ नासिकेत उवाच ॥
अथातः संप्रवक्ष्यामियद्दृष्टंयमशासनं नास्मिन्वैदक्षिणेद्वारे क्लिश्यंतेपापिनोजनाः १
तत्र नानाविधादृष्टा दूतायेवै विभीषणाः दीर्घदेहाश्चलंबोष्ठा ऊर्द्ध्वकेशाभयंकराः २

और सुनोजो मैंने देखी यमकी पुरी और यमकी आज्ञा दक्षिण द्वारमें जो पापीजनों को क्लेशाही पावते देखा १ और तहां अनेक रूपवाले यमदूत देखे सो सुनो बड़े भयानक देखनेसे डरलगे बड़ीदेही· लंबेहोठ· ऊपरको खड़े बाल ॥ २ ॥

कोईतो ऐसेहैं शूकरके समानहै आकार जिनका काला जिनका वर्ण पतला पेट· कोई सिंह कैसे पैरवाले· कोई भेड़िये कैसे पैरवाले· ३ कोई बिलेके रूप वैसेही नेत्रवाला· कोई सर्प वा बिच्छूके रूप भयानक ४ कोई त्रिशूल हाथ में लेरहाहै· कोई मुद्गर मोगरी कोई तलवार कोई खेटशास्त्र· कोई परघ शास्त्र ५ कोई भिंदपालनामशास्त्र कोई मूसल· कोई बरछी· कोई कुहाड़ा ६ ऐसे २ शास्त्रधारी दूत यमराजने पापियोंके दंडदेनेको नियत कियेहैं

वराहसदृशाकाराः कृष्णवर्णाः कृशोदराः अपरे सिंहपादाश्च व्याघ्ररूपास्तथापरे
३ मार्जाररूपिणश्चान्ये तन्नेत्रास्तुतथापरे सर्पवृश्चिकरूपाश्च रौद्राभरणभूषिताः ४ त्रि
शूलधारिणः केचिद्दंडमुद्गरधारिणः खड्गखेटधराः केचिद्भुशुंडी परिघायुधाः ५ भिंदि
पालधराः केचित्केचिन्मुशलपाणयः करालास्याः शक्तिधराः केचित्परशुपाणयः ६ निर्मि
तायमराजेन पापानुग्रहकारिणः नानायुधधरादूतास्ताडयंतिदुरात्मनः ७ पाप कर्मर
तान् क्रूरान् तथैव कलहप्रियान् क्षिपंतियमदूतास्ते ह्यसिपत्र वनांतरे ॥ ८ ॥

ताडना करतेहैं दुरात्माओंको ७ जो मनुष्य नित्य कलह करतेहैं क्लेश जिनको प्याराहै सो असिपत्र नाम नरक में गेरदिये जातेहैं ॥ ८ ॥ श्रीरामचंद्रजी लक्ष्मणजी सीताजी सदासहाय शुभम् ॥

जो मनुष्य म्लेछ वृत्ति करके वा चोर वृत्ति करके जीवका कर्तेहैं सो कालसूत्र नाम नरक में गेरे जातेहैं ९ यूंही जन्म
के कर्म करके नित्य दंडको पावतेहैं और काग कुत्ते गीध उनको भक्षण करतेहैं १० तिस स्थानमें मैंने देखें मनुष्य
बहुत पीडित होतेहैं जमके दूतों करके जहां तहां ११ एक समय मैंने देखा सूर्य पुत्र धर्मराजको कि १२ भैंसेपर
सवार बड़े बलवान् कुंडल कानोंमें पहरे दंड और फांसी लिये १३ बड़े बुद्धिमान् बड़ी उनकी काया बहुतसे दू

पतिताकालसूत्रेषु मयादृष्टाश्चकेचन: जीवन्तिम्लेछवृत्त्याये चौरकर्मोपजीविन: ९ एवंके
मेभिरेतेवैसहन्तेबहुयातना: भक्षयंतिचतान्श्वाना: काकगृध्रा: कुशालिच १० तत्रस्थाने
मयादृष्टामनुष्याबहुपीडिता: रौद्ररूपैर्महाघोरैर्यमदूतैरितस्तत: ११ एकस्मिन्समये
दृष्टोमयावैवस्वतोयम: १२ महिषासनमारूढोमहाबलपराक्रम: १३ कुंडला
लंकृतःश्रीमान् दंडपाशधरोद्विज: बुद्धिशालीमहाकायोदूतैश्चपरिवारित: १४ आ
गतोनरकान्वीक्षन्क्रोधरक्तांतलोचन: तदादूतगणा:सर्वेनत्वातस्याग्रत:स्थिता: १५ प॰
यमउवाच। शृणुध्वंवचनंदूता: शीघ्रंकुरुतमाचिरं भूतलेराक्षसाघोरा तिष्ठंतेधर्मवर्जि ६

तसाय १४ क्रोधसे लाल नेत्र नरकों को देखने हुवे फिरते भये तब और जो दूतगण थे दंडौत करके आगे आन खड़े हुवे ५
उनको देख यम बोले अरे दूतो सुनो मेरी आज्ञा जलदी करो देर नो करो जावो पृथ्वीपर राक्षस बड़े घोर धर्महीन हैं ॥ १६

तिनको जायके जलदी लेआओ बड़े बलकरके डरना मत ऐसें जब धर्मराजकी आज्ञा पावतेही दूत सब बड़े बेगसे धरती पर १६ जहां वो राक्षसथे वहां आवतेभए तहां दूतों और राक्षसोंका युद्ध होनाभया मुद्गरतोमर १७ तीर लोहेकेदंड तलवार त्रिशूल बंदूक इन शस्त्रोंकरके १८ बड़े बलसे दूतोंने राक्षसोंको जीतलिया और फांस से बांध दैत्योंको धर्मराजजीके पास लेगए २० धर्मराजने दैत्योंको देख क्रोधवान हो बोले दूतोंको इनको चित्र

तानानयध्वंत्वरितं नभेतव्यंमहाबलात् इत्युक्ते धर्मराजेन वेगेनैवमहीतले १७ ता
तास्तेमिलितास्सर्वे यत्रतेदानवास्थिताः तत्रतेरभवद्युद्धं प्रासमुद्गरतोमरैः १८ सायकैस्सै
हदंडैश्च खड्गैः शूलैर्भुशुंडिभिः एवंतेषामभूद्युद्धं महद्वै रोमहर्षणं १९ किंकरैः काल
पाशेन जितास्ते राक्षसारणे पाशैर्बध्वा महादैत्यानानिन्युस्ते यमांतिके २० धर्मराजश्चतान्
दृष्ट्वा महाघोरतरोऽभवत् स्वान्दूतान्प्रत्युवाचाथ नीयतांचित्रवेश्मनि २१ चित्रगुप्तस्ततो
सर्वान् कृमिकुंडेषुनिक्षिपेत् २२ एवंविप्राः जगत्सर्वं कालपाशवशंभवेत् युवानोबाल
काःकेचित् वृद्धाश्च गर्भगाः परे ॥ २३ ॥ एवंभूतानिसर्वाणि कालस्यवशवर्तिनः ॥

गुप्तके पास लेजावो सो दूत लेजातेभए २१ चित्रगुप्त सब दैत्योंको कीडोंके कुंडमें गेरनेकी आज्ञा देतेभए इन्होंने उसी स मय कीडोंके कुंडमें गेरदिया २२ सो ऐसेही हे ब्राह्मणों सारा संसार कालके वशहै जवानहो बालकहो वा बूढाहो वा गर्भ में हो ॥ २३ ॥ ऐसे सब जीव मात्र कालके बशमें हैं ॥

जो मनुष्य पापीहैं अथवा धर्महीनहैं २४ इसलोकमें दुःखदारिद्र करके भरेहैं और किया हुवा जो शुभअशुभ कर्महैं निश्चय भोगना पड़ेगा ॥ २५॥ इति नासिकेत भाषाटीका सुबोधिन्यां द्वादशोध्यायः १२ ॥ नासिकेत फिर बोले हे मुनीश्वरोमैं जिसी स्थानमें धर्मात्मा मनुष्यभी देखे अ पना किया कर्म भोगते हैं धर्मराजकी आज्ञासे १ तिस स्थानमें बड़ी २ सुंदर नदियां शर्कराकी· दूधकी· दहीकी· घृतकी· शहतकी वहतीहैं २

येच पापेषु वर्त्तन्ते धर्महीनाश्च मानवाः २४ इहलोके च दृश्यन्ते दुःखदारिद्रपूरिताः अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं २५ इति श्रीनासिकेतोपाख्याने द्वादशोध्यायः १२ ॥

नासिकेत उवाच ॥ तत्रस्थाने मया दृष्टा धर्मिणश्च द्विजोत्तमाः फलं कृतस्य भोक्तव्यं धर्मराजस्य चाज्ञया १ तत्रस्थाने महानद्यो मया दृष्टा मनोहराः शर्करादधिदुग्धाज्यमधूनां च महानदी २ पूर्वोत्तरदिशोर्मध्ये मया दृष्टाश्च धार्मिकाः दिव्यांबरधरा रम्या दिव्याभरणभूषिताः ३ हेमकुंडलशोभाढ्या हारकेयूरधारिणः वीणावंशनिनादाश्च चामरैरुपशोभिताः ४ उच्चासनसमारूढा ह्यप्सरोभिरुपासिताः दिव्यस्रग्गंधलिप्तांगा विविधैरुत्सवैर्वृताः ५ ॥

और पूर्वदिशासे उत्तर दिशातक धर्मात्मा मनुष्य वास करते देखे दिव्य जिनके वस्त्र दिव्य गहने पहरे ३ सोनेके कुंडल कानोंमें पड़ेहैं हार बाजू पहरेहैं वीणा और वांसुरीका शब्द सुनेहैं चमर होरहेहैं ४ ऊंचे आसनोपर बैठेहैं आगे अप्सरा नाचतीहैं दिव्यमाला पहरे सुगंध·अतर लगाहे अनेक तरहके उत्सव होरहेहैं ॥ ५ ॥

कुंदन तरीखा देहहै मुकुट सुंदर पहरेहैं धर्मात्मा लोक ऐसें यमलोकमें सुख पूर्वक वास करतेहैं ६ जिनोंने श्रद्धाक
रके ब्राह्मणों को दान दियेहैं अन्नदान· वस्त्रदान· सोनादान· भोजनदान किये हैं ७ तिलदान· भूमिदान जो धर्मा
त्मा मनुष्योंने कियेहैं वही सारे सुख दानके प्रतापसे भोगते हैं ८ जो मनुष्य वर्णाश्रमके धर्मपालेहैं ब
लवैश्य नित्य करते हैं अतिथि आयोंकी सेवा करतेहैं ९ संध्या उपासन· नित्यकर्म कर्तेहैं वेदका अध्ययन कर्तेहैं

तप्त कांचन वर्णाभा मुकुटैरुपशोभिता: एवंविधा धार्मिकास्ते यमलोके समासते ६
श्रद्धया विप्रमुख्येभ्यो दत्तानि विविधानि च अन्नदानानि वस्त्राणि हिरण्यं भक्ष्यभोजनं ७
तिलदानं भूमिदानं कृतं यैर्धार्मिकैर्नरैः तेलभंतेविलसौख्यं दानधर्मप्रभावतः ८ व
र्णाश्रमस्थाये लोका निजधर्मस्यपालकाः आगतान्वैश्वदेवांते ह्यतिथीन्पूजयंति ये ९
संध्योपासनकर्माणि वेदाध्ययनमेव च कुर्वंति ये स्वधर्मस्था दयादाक्षिण्यसंयुता १०
गां च विप्रांश्चयेकष्टादुद्धरंति नरोत्तमाः शृण्वंते वेदशास्त्रं ये कुर्वंते विप्रसेवनं ११ तीर्थाट
नं च कुर्वंति सदा संयमसंयुताः पंचाग्निसाधकाये तु क्रोधलोभादिवर्जिताः १२ ॥

अपने धर्ममें सावधान रहते हुवे दया करके चतुराई करके युक्त हैं १० गौ और विप्र ही जो इनको कष्टसे
छुडावे है वो मनुष्योत्तम हैं और जो मनुष्य वेद शास्त्र पुराणों का श्रवण करते हैं ब्राह्मणों की सेवा करते हैं ११ तीर्थयात्रा
करते हैं गरमीमें पंचाग्नि तपतेहैं नेमधर्मसे रहतेहैं क्रोधलोभकर्के रहित हैं ॥ १२ ॥

जो मनुष्य ब्राह्मणकी कन्याका विवाह करतेहैं जो धर्मवृक्ष वट·पीपल·अंब·जामन·नींब इत्यादिक लगाते हैं।
जितेंद्री रहतेहैं निर्जल व्रतधारण कर्नेवालेहैं १३ कालमें अन्नका दानकरतेहैं और सुकालमें सुवर्ण दान कर्नै
वाले हेमंत ऋतुमें वस्त्रकादान कर्तेहैं तथा अग्निका इंधनकादानकरते हैं १४ पराये उपकार करनेमें जिनको प्रेम
हि धर्मअधर्मकाविचारकरनेवाले नित्य तनमनसे पराया हित चाहनेवाले ये सारे सुकर्म करने वाले मैंनेयेसे

कन्यादानंकृतंयेन रोपिताधर्मतोद्रुमाः यतिनोयोगयुक्ताश्च निराहारायतव्रताः १३ दुर्भि
क्षेन्नप्रदातारः सुभिक्षेचहिरण्यदाः हेमंतेवस्त्रदातारो वह्निदाश्चतथैवच १४ परोपकारनि
रताधर्माधर्मविचारकाः शरीरेणुनेरतानित्यं नित्यंपरहितेरताः १५ एतेसर्वेमयादृष्टाधर्म
लोकेनसंशयः १५ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्याने पुण्यधर्मनिरूपणंनाम त्रयोदशोध्यायः १३
नासिकेतउवाच ॥ पुनःस्थानंमयादृष्टंधर्मात्मायत्रतिष्ठति नदीपुष्पोदकानाम जलंव
हतिशीतलं १ सुवर्णवालुकातस्यांतीरेनानाविधाद्रुमाः २ नद्यांतीरेस्थिताहंविप्रा दृष्टवानस्मि
विराणीच पुष्पाणिच सुगंधीनिधारयंतिचतेद्रुमाः २॥

सुंदर स्थानोंमें विराजमानदेखे ॥ १५ ॥ इतिनासिकेतभाषाटीका पुण्यधर्मनिरूपणंनाम त्रयोदशोध्यायः॥ १३ ॥ फेर
नासिकेतबोले हे ऋषियो और स्थान बहुत सुंदर पुण्यवान् नर वसतेहैं पुष्पोदकानाम नदी वहतीहै शीतल और मी
ठा उसका जलहै १ और सुवर्णका उसका बालुहै और उसके किनारे सुंदर फलवान वृक्षोंकी छायाहै और बडे२ सुगंधके
फूलखिल रहेहैं ॥ २ ॥

ओर बहुत सुंदर मंदिर बनेहैं तिनमें धर्मात्मा मनुष्य क्रीडा करते हैं ३ ठंढी मंदसुगंधवाली पवन चलरहीहै और
सुंदर स्त्रियां क्रीडा करनेकोहैं ४ ओर सिद्ध गंधर्व किन्नर सुंदर वस्त्र रत्नोंके गहने पहरे शोभावान् तहांहैं ५ सुंदर
रूपवान तरुण चतुर जिनको देखतेही मनहरा जाय ऐसी स्त्रियां चांदसा जिनका मुख बडे२ नेत्र सुंदर लंबे जिनके
केश ६ अपने पतियों के साथ आनंदसे भोग विलास करती हैं उस नदीके किनारे सुंदर स्त्री पुरुष ७ वसते हुवे पूर्व

तेषुक्रीडंतिमनुजाःसदाधर्मस्यपालकाः शीतमंदसुगंधैश्च पवनैःसवितानराः दिव्यरूपधरा
नार्यःक्रीडंतिनरपुंगवैः ४ सिद्धगंधर्ववृंदैश्च किन्नरैश्चोपशोभिताः नानावस्त्रपरीधानानानार
त्नोपशोभिताः ५ रूपलावण्यसंयुक्ता दृष्टमात्रामनोहराः संपूर्णचंद्रवदनाः कर्णायतलोच
ना ६ एवंविधाःस्त्रियोरम्याःमोदंतेपतिभिःसहः पुण्योदकायास्तीरेतेनरानार्यश्चशोभनाः ७ व
संतोविविविधान्भोगान्भुंजतेपूर्वकर्मणा नदीत्रैलोक्यविख्याताधर्मराजपुरेस्थिताः ८ नक्षुधा
नपिपासाच नतापशीतजंभयं नजरानैवमृत्युश्च नदुःखंपलितानिच ९ एवंपूर्वकृतेनैवल
भ्यतेसुखमुत्तमं पापात्मानोदुराचारा नित्यंकलहकारिणः १० ॥

जन्मके कियेहुवे सुकर्म तिनकेफल भोगेहैं ऐसी तीनलोकमें विख्यात वह नदी है ८ और न वहां भूख लगे न प्यास न
गरमी न सरदी का भय न वहां बुढापा न जरा न मृत्यु न किसी तरहका दुःख ९ ऐसे धर्मका फल जो उत्तम सुखहै
तिसको भोगते हैं और जो पापी दुराचारी नित्यकलह करनेवाले ॥ १० ॥

चुगलखोर निर्दयी हैं सो सारे ही दुःखभोगते हैं ११ जो मनुष्य नारायणकी भक्ति ध्यान स्मरण करते हैं सो यमके मार्गकी
वार्त्ता भी कानोंसे नही सुनते वो संसार समुद्रके पार गये हुवे जानना चाहिये १२ ॥ इति नासिकेत भाषाटीकायां च
तुर्दशोध्यायः १४ ॥ फेर नासिकेत बोले कि हे ऋषियो और मैं यमके मार्गका विस्तार करता हूं सो सुनो अठासी
हजार योजनके प्रमाण १ यमलोकका मार्ग मनुष्य लोकसे जानो २ यमकी फांसीसे बंधे हुवे प्रेत हाय हाय करते

निंदकाः सर्वजीवानां तेवै सर्वत्र दुःखिताः ११ विष्णुभक्तिरतायेस्तु विष्णुध्यान परायणाः शृ
ण्वंते यमलोकस्य वार्त्तामापिनतेनराः १ संसारार्णवमुक्तास्ते भवंत्येवन संशयः १२ ॥
इतिश्रीनासिकेतोपाख्याने पुष्पोदकानदीनर्णनोनाम चतुर्दशोध्यायः ॥ १४ ॥ नासि
केतउवाच ॥ अथाहं संप्रवक्ष्यामि यममार्गस्यविस्तरं अष्टाशीति सहस्राणि योजनां प्रमा
णतः १ यमलोकस्यचाध्वान माहुर्मानुष्यलोकतः २ याम्यपाशैर्वृतः प्रेतो हाहेति प्ररुदन्
पथि स्वगृहंतु परित्यज्य पुरंयाम्य मनुव्रजेत् ३ मार्गे बहूनि दुःखानि असिपत्रवनान्विते
क्षुत्पिपासार्दितः प्रेतः प्राप्नोति सततं द्विजाः ४ तस्मिन्मार्गे महाघोरे तप्तवालुक संयुते ५ ॥

रोवते हुवे मार्ग विषें अपने घरको छोड यमपुरको जाते हैं ३ और मार्गमें बहुत दुःख हैं असिपत्र नाम बन है भूख
प्यास मार्गमें बहुत लगती है तपा हुवा बालू है ऐसा महाघोर मार्ग है कहते हुय भी लज्जा आवती है ॥ ५ ॥

कहींअंगारेपड़ेहैं कांटे बड़तहैं ६ भयानक जो यमदूतहैं बड़ी मारदेतेजातेहैं कभी मूर्छाखायगिरपड़ेहैं फिर का पनेहुवे उरसेखड़ेहोतेहैं ७ ऐसे बिनाधर्मके पापियोंकी यह दशाहोती है नर्कमें पड़तेहैं ८ एकतो महापाप· उपपाप जातिभ्रष्टकरनेवाला· और वर्णसंकर करने वाला. जोपापहै मैलाकरनेवाले अपवित्रकरनेवाला जोपापहैं मनुजी. ने जोकहेहैं तिनको जो नीचमनुष्य करतेहैं १० और जोमहापापहै सो कहतेहैं· ब्रह्महत्या· गोहत्या· मदिरापान·

क्वचिदंगारपर्यंका अंधकारान्वितेद्विजाः ६ क्रूरास्ते किंकराः सर्वे पापिष्ठांस्ताडयंतिहि मू र्छितान्क्षणमात्रेण पतितान्पुनरुत्थितान् ७ विनाधर्मेण पापास्ते पात्यंते नरके ध्रुवं ८ महापापोपपापानि जातिभ्रंशकराणि च संकरीकरणानिस्युर्मलिनीकरणानि च ९ अपा त्रीकरणपापं येकुर्वंति नराधमाः तान्यहं संप्रवक्ष्यामि मनुनोक्तानि वैद्विजाः १० ब्रह्मह त्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः महांतिपातकान्याहुः संसर्गोपि चतैः सह ११ गोवधो पेयसंपानं पारदार्यात्मविक्रयौ गुरुमातृपितृत्यागः स्वाध्यायस्य सुतस्य च १२ परिवित्ति नुजेजंतोः परिवेदनमेवच तयोर्दानं च कन्यायास्तयोरेवच याजनं १३ ॥

चोरी· गुरुकी स्त्रीसे गमन· ये महा बड़े पाप कहातेहैं तिनके वालोंसे मिलनाभीयोग्य नहीं ११ परस्त्रीगमन· कन्याका बेचना· माता· पिता· गुरु· बालक· पुत्र इनकोत्यागदेना १२ परिवेत्ता· परावित्ति भाव अर्थात् बड़े पुत्रसे पहले छोटे पुत्रको व्या हना ॥ १३ ॥

कन्याको दोषलगाना· विरतकाभंगकरना· तालाव· बाग· स्त्री· संतान· इनका बेचना १४ संस्कारहीन भाईबंधों का त्यागना· महासत्रमेंप्रवृत्तहोना १५ हिंसा करकेऔषधकरणी· व्यभिचारकरना· इंधनकेअर्थ हरे वृक्षका काटना· १६ केवलअपनेलिये भोजन तैयार करना· निंदितअन्नका भोजनकरना· अग्निहोत्रादिक नकरनी· आपोशानरहित· वां ऋत्त्रीका सेवन· स्त्रीशूद्रादिक केहाथसेवध· नास्तिकता· येउपपापहैं १७ ब्राह्मण रोगीको औषध नहीं करनी·

कन्यायाहूषणंचैव वार्द्धुषित्वंव्रतच्युतः तडागारामदाराणामपत्यस्य चविक्रयः १४व्रात्य तावांधवत्यागो भृतकाध्यापनंतथा सर्वाकारेष्वधिकारो महायन्त्रप्रवर्तते १५ हिंसौषधेन स्त्र्याजीवोऽभिचारोमूलकर्मच इंधनार्थं मशुष्काणां द्रुमाणामवपातनं १६ आत्मार्थंचक्रि यारंभोनिंदितान्नादनंतथा अनाहिताग्नितास्तेन्य मपोषणमयक्रिया॥धान्यस्याथपशोस्तेन्य मपत्यह्णीनिषेवनं स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधो नास्तिक्यंचोपपातकं १७ ब्राह्मणस्यरुजःकृत्य· घ्रातिरघ्रेयमद्ययोः जैह्म्यंपुंसि चमैथुनं जातिभ्रंशकरंस्मृतं १८ खराश्वोष्ट्रमृगेभाना मजावि कवधस्तथा संकरीकरणंज्ञेयं मीनाहिमारियम्यच १९ ॥

मदिरापान· जिह्माकरके वा पुरुषसे मैथुनकर्म· येजातिभ्रंशक पापहैं १८ खर घोडा ऊंठ हिरण भेड़ बकरी इनका बध करना यह संकरी करण पापहै महिषी· मीन· मछली सर्प इनका बधकरनाभी ॥ १९ ॥

नंदितोंसे धनलेना॰ विप्र वाणिज्यकरे शूद्रकी सेवाकरे यह अपात्रीकरण कहावेहै २॰ झूठबोलना॰ कामिसे ग्रार
ले जीवाहिंसा मदिरा समान भोजन करना॰ फल फूल इंधनकाचुरावना॰ २१ ऐसेजो छै प्रकारके पापहैं जो इन
को करते हैं सारे धर्मोंको छोडकर २२ दान नहीं करते सूमहैं अहंकारी॰ लोभी॰ विषयमें जिनका मन लगारहता है
मोहसे बुद्धिनाशहुई ऐसोंका नरकमें वासहोताहै २३ इति नासिकेतभाषाटीकायां पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यंशूद्रसेवनं अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणं २०
कृमिकीटयोर्हिंसा मद्यानुगतभोजनं फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्यंचमलावहं २१ यभिरुक्तैः षड्
विधैःपापैःपच्यंते तेनराधमाः पापकर्मरतायेच सर्वधर्मविवर्जिताः २२ अदत्तदानाः कृपणा
गर्विता लोभसंयुताः विषयासक्तमनसो बुद्धिमोहान्विता नराः २३ ॥ इतिनासिकेतोपाख्या
नेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ज्ञाताज्ञातेषुपापेषु स्वल्पेषुचमहत्सुच षट्से
षट्सुचमासेषु प्रायश्चित्तंतुयश्चरेत् १ निष्कल्मषो नरोविप्राः सकृतांतंनपश्यति प्रा
यश्चित्तमकृत्वेह नरोभवतिनारकी २ प्रायश्चित्तंचरेद्युक्तवाङ्मनःकायकर्मसु ॥

फिर नासिकेतबोले जाना अनजाना जो पाप है बहुत वा थोड़ा जो छै महीनेके भीतर प्रायश्चित उसका करदेतो १ वह म
नुष्य पाप रहित होकर यमपुरीको न जायगा और जो प्रायश्चित्त न करेगा तो निश्चय वो नर्कको प्राप्त होगा २ जो मनुष्य

श्रद्धा करके प्रायश्चित करे मन· वाणी· कायासे शुद्ध सोजन देव गंधर्व किन्नरों करके सेवित शुभस्थान तिस को प्राप्त होगा ३ नित्य वेद भ्यास करनेवाले· तीर्थसेवी· इंद्रीजीत ऐसे मनुष्य यमको नहीं देखते ४ पापकरने वाला भी है और नित्य तीर्थ स्नान करे प्रात और देव पूजन करनेवाला· सोभी यमपुरीको नजावेगा ५ पृथ्वी गौ सुवर्ण और षोडशदान करनेवाला है स्वर्गको जाकर उलटे नहीं आवते ६ पुण्यदिनमे व्यतीपात संक्रांति

संप्राप्नोतिशुभाल्लोकान् देवगंधर्वसेवितान् ३ वेदाभ्यासरतोनित्यं नित्यंतीर्थोपसेव कः नित्यंजितेंद्रिय सत्य यमंरौद्रंनपश्यति ४ याम्यंहियातनादुःखं प्रातःस्नायीन पश्यति प्रातःस्नानेनपूयंते ह्यपिपापकृतोनराः ५ पृथिवींकांचनंगांच महादानानि षोडश दत्वातु ननिवर्तंते स्वर्गलोका द्विजोत्तमाः ६ पुण्यासुतिथिषुप्राप्ता व्यतीपा तेचसंक्रमे स्नात्वादत्वाच यत्किंचित् नैवगच्छंतिदुर्गतिं ७ नैवाक्रमंतिदातारो घोरंवैदारुणंपथं मर्त्यलोकेनजायंते कुलेधन विवर्जिते ८ सत्यवादीसदामौ नीप्रियवादीच योनरः अक्रोधनःक्षमाचारो नातिवागनसूयकः ॥ ९ ॥

इन्मे जो दान करते हैं सो दुर्गतिको नहीं प्राप्त होते ७ दानशील जो मनुष्य हैं सो दारुण जो यम मार्ग है तिसको नहीं चलते और मृत्युलोकमें जन्म लेनेपर भी दरिद्री कुलसें पैदा नहीं होते ८ जो मनुष्य सत्यवादी है मीठा बोलने वाला और पराये धर्मकी भी रक्षाकरनेवाला पराये गुणका कहने वाला ईर्षा क्रोध रहित ॥ ९ ॥

सबजीवोंसे हितकर्नेवाले॰ चतुर॰ पराये गुणको कहने वाले॰ धर्मकी रक्षाकर्नेवाले १० पराये धनको जो तृण समान मान
ते हैं॰ ऐसे मनुष्य यमपुरीको नहीं जायगे ११ जो धर्मात्मा मनुष्य पराई स्त्रीको सेवन नहीं करते सो तिनमय यमपुरीको नहीं
देखेंगे १२ जो मनुष्य देवताकी तरह मातापिताकी सेवाटहल करतेहैं वृद्धअवस्थामें सोभी यमपुरीकी पीड़को नहीं प्राप्तहोंगी
१४ और जो स्त्री शीलवानहै सो धन्यहै शीलके भंगहोने से यमपुरी को प्राप्त होगी ॥ १५ ॥

सदा दाक्षिण्यसंपन्नः सर्वभूतहितेरतः गोप्ताचपरधर्माणां वक्ता परगुणस्यच १० परस्वंतृ
णमात्रंच मनसापिनयोहरेत् नपश्यंतिद्विजश्रेष्ठा यतेनरकयातनां ११ मनसाच परेषांयः
कलत्राणिनसेवते सहलोकद्वयेनैव तेनावश्यंधराधृता १२ तस्माद्धर्मरतैस्त्याज्यं परदारो
पसेवनं यांतिये परदारांस्ते नरानिरय गामिनः १३ मातरंपितरंयस्तु ह्याराध्यपतिदेववत्
त् संप्राप्ते वार्द्धकेकाले नसयातियमालयं १४ अतश्चैवस्त्रियोधन्याः शीलस्यपरिरक्षणात्
शीलभंगेननारीणां यमलोकः सुदारुणः १५ तस्मिन्मार्गेसुखंयांति गोप्रदानेन मानवाः
गजाश्वरथदानेन यममार्गः सुखावहः १६ ॥ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्याने षोडशोध्यायः

जो मनुष्य गोदान॰ अश्वदान॰ रथदान करने वालाहै सो यमपुरीको जाकरभी मार्गमें सुखसे जाते हैं ॥ १६ ॥
॥ इतिश्री नासिकेत भाषाटीका सुबोधिनीयां षोडशो ऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ॥

नासिकेतजी फेर बोले हे ऋषियो और सुनो यममार्ग बड़ा भयानक है और तिस मार्ग में बड़े २ पर्वत हैं १ असिपत्र नामवन है कहीं पत्थर वरसते हैं कहीं तपा हुवा बालु है २ हिमालेसे सौगुनी अधिक सरदी पड़ती है बड़ा अंधेरा है ३ छुरीकी धारसरीषा मार्ग है कहीं पीप की रुधिरकी कीच होरही है और तहां मार्ग में बैतरणी नदी है पापियों को दुःखदाई है ४ सौ योजनका विस्तार जिसका जिसके ऊपर काग गीध भयके देनेवाले हैं ५ जिसमें पापी मनुष्य डूबते हैं दुःखी होते हैं ५॥

नासिकेत उवाच॥ पुनरेव प्रवक्ष्यामि यममार्गं भयंकरं तस्मिन्मार्गे महाघोरे विषमाः पर्वताः क्वचित् १ कीलकाश्च क्वचित् घोरा असिपत्र वनं क्वचित् क्वचिद्वर्षंति पाषाणाः क्वचित्संतप्तवालुकाः २ हिमालयाच्छतगुणं क्वचिच्छीतं सुदारुणं अंधकारं महारौद्रं क्वचिद्धर्मः सुदारुणः ३ क्षुरधारसमं यं मार्गं क्वचिद्वै पूयशोणितं तत्र वैतरणी नाम नदी च ह्यतिभयंकरा ४ शतयोजन विस्तीर्णा काकगृध्रैः समन्विता तस्यां मज्जंति पापिष्ठा दुःखशोकसमन्विता ५ गोप्रदानस्य कर्त्तारस्तेन तरंति द्विजोत्तमाः तीर्थस्नानरतैर्मर्त्यैः सा सरित्सुतरा भवेत् ६ तस्मिन्नेव तु मार्गे ये धर्मिष्ठाः सुखसंयुताः एकएवास्ति सर्वत्र व्यवहारो द्विजोत्तमाः ॥ ७ ॥

जो गोदान करने वाले हैं सुखसे पार उतर जाते हैं जो तीर्थ स्नान करते हैं सोभी सुखसे तर जाते हैं ६ तिस मार्ग में धर्मात्मा जो लोग हैं सुखसे जाते हैं दोनों लोक में इस लोक परलोक में एकही व्यवहार है ॥ ७ ॥

हे ऋषियो एक समयकी वातहै किधर्मराजकी सभामें नारदजी महाराज आवतेभये सूर्येकासा जिनका प्रकाश है
८ धर्मराजजी नारद मुनिको देखतेही हाथजोड़ खड़े होतेभए अर्घ पाद्य करके पूजन करतभए ९ आसनपरबैठा
वते भये कैसेहैं नारदजी शोभायमान जैसें ताराराणमें चंद्रमा १० तब सूर्यपुत्र धर्मराजासु खबैठाय पूंछने
भये कि द्विजश्रेष्ठ ब्रह्माके पुत्र महामुनि ११ अपने आवने का कारण कहो आपने बड़ी कृपा करी आनमेरा

एकस्मिन्समयेविप्रा धर्मराजसभांप्रति सूर्यतेजः प्रतीकाशो ह्यागतो नारदोमुनिः ८
यमस्तुनारदं दृष्ट्वा प्रत्युत्थाय कृतांजलिः अर्घ्यपाद्यादिभिश्चैव नारदं प्रतिपूजयत् ९
आसनेचोपविष्टस्तु नारदो देवदर्शनः शोभतेस्म महातेजा स्तारापतिरिवांवरे १० ततोवैव
स्वतोराजा नारदं प्रत्युवाचह स्वागतं भोद्विजश्रेष्ठ ब्रह्मपुत्रमहामुने ११ अद्यमे सफलंजन्म
ममाद्यसफलंदिनं अद्यमेसफलंसर्वं भवदालोकनान्मुने १२ किमर्थमिहचायातो ब्रह्मा
गमनकारणं॥ नारदउवाच॥ भवतांदर्शनार्थाय ब्रह्मलोकादिहागतः धर्माधर्मस्य सर्वे
ष्य निर्णयं द्रष्टुमागतः १३ ॥ ॥ इतिश्रीनासिकेतो पाख्याने सप्तदशोध्यायः॥ १७॥

जन्म सफल हुवा आजकादिन सफल है आज मेरा संपूर्ण सफल हुवा आपके दर्शन करनेसे हे मुने १२ तब नारद
मुनिबोले कि हे धर्मराज तुम्हारे मिलनेको मैं ब्रह्मलोकसे आयाहूं तुम कैसेहो धर्म अधर्मका निर्णय करने वाले
हो ॥ १३ ॥ ॥ इतिश्री नासिकेत भाषाटीका सुबोधिन्यां सप्तदशोध्यायः ॥ १७ ॥ ॥

नासिकेत बोले हे ऋषियो नारदजीका और धर्मराजका संबादहो हीरहाथा कि इतनेमें सब देखतेहैं कि सैकड़ों वि
मानदिव्य १ और भेरी मृदंग के शब्द और बाजोंके शब्द और गीत बजानेके शब्द घंटे बीणा की तंका शब्द होते हुवे
हजारों तेजवान आवते भये आकाश मार्ग करके तिनको देखकर यमराजतो सहसा जलदीसे छिपगए ३ और
ब्रह्माके पुत्र नारदभी थोड़ीदेरके पीछे धर्मराजजी सभामें आए कैसे कि भयमान कांपित कांपने घबराय से॥ ४॥

नासिकेत उवाच॥ तयोरेवं संवदतोर्नारदस्य यमस्य च तत्रस्थानेच दिव्यानां विमाना
नांशतानिच १ भेरीमृदंग निर्घोषै गीतवादित्रनिस्वनैः घंटामर्दल बीणानां रवेणपणवस्य
च आगतानि सहस्राणि तेजःपुंजयुतानिच २ तेनवै सहसा विप्राय मोंतर्धानमागमत् ३
ब्रह्मपुत्रो विलक्षोभूद्‌वदन्नेव किंचन क्षणेनैवागतो धर्मो भयार्तो भ्रष्टमानसः ४ नारदउ
वाच। सत्यं ब्रूहि महाराज विष्णुतुल्यपराक्रम: आसुरा राक्षसाघोराः सर्वेते वशसंस्थि
ताः कस्मात्त्वं भयसंत्रस्तो वायुवेगेन निर्गतः ५ यम उवाच। अतिगुह्यां मुनिश्रेष्ठ कथां
पापप्रणाशिनीं ब्रवीमि सकलां विद्वन् पुनर्धर्मविवर्धनां॥ ६ ॥

नारदजी बोले हे धर्मराजजी महाराज विष्णुके समान पराक्रम तुम्हारा और दैत्य असुर मनुष्य सब तुम्हारे वशमें
तो तुम किसके भयकरके डरे हुवे जलदी निकसके भागते भय मुझे बड़ा संदेह है सो कहो ५ इतना सुन धर्मराज बोल
ते भए कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठ बड़ी छिपी हुई वार्ता है कि बहुत सुंदर यह कथा है पापोंके नाश करनेवाली और धर्म
के बढ़ावने वाली है सो सुनो कहता हूं मैं सारी विस्तारसे ॥ ६ ॥ ॥ ॥

मृत्युलोकमें जनक नाम राजा विख्यातहै बड़ाबुद्धिमान सत्यधर्म और नेमधर्ममें परायण ब्रतमें लगाहुवा मनजिस
को· प्रजाको पुत्रके समान पालनेवाला· इंद्रीजित दानी· क्रोधलोभ करकें रहित ७तिस राजाजनककी स्त्री बड़ीरूपवान
सुंदर सत्यव्रता जिसका नाम सारे सुभलक्षणवाली· सारे पतिव्रता भावमें परायण ८अपने पतिको विष्णुसमान जा
ननेवाली· नित्यसेवा करनेंवाली· बड़ीपतिव्रता पतिहि जिसकेप्राण· पतिकी आज्ञामें सदारहनेवाली· पतिके सुखसेसुखी

मृत्युलोके महाप्राज्ञः सत्यधर्मपरायणः जनकोनाम विख्यातः प्रजानांपरिपालकः जि
तेंद्रियोदानपरो क्रोधमात्सर्यवर्जितः ७तस्यपत्नी सरूपासीत् नाम्नासत्यव्रताशुभा सर्व
लक्षणसंपूर्णा सर्वधर्मपरायणाः ८ भर्त्तारंविष्णुबुध्यायानित्यंशुश्रूषतेशुभा पतिव्रताप
तिप्राणा भर्तृवाक्येसदारता सुखितेसुखितानित्यं दुःखिते दुःखिताचया ९ दक्षाचप्रियवाङ्
नित्यंमक्रोधानृतवर्जिता अतिथिः पूज्यतेनित्यं सर्वसद्गुणशालिनी १०जनकस्यप्रियाभार्या
धर्मकार्येसदारता सयानिब्रह्मणोलोकं विमानवरमास्थिता ११ शक्रादयोदेवगणास्तस्या
संमुखमागताः पितामहश्चतस्यावै प्रणतिंकृतवान्विभो १२ ॥ पतिकेदुःखमें दुखी रहने वाली·
९ बड़ीचतुर मीठी कोमल बाणी बोलने वाली· झूठनही बोलती· कभीक्रोधनहीकरती· अतिथकी नित्यपूजाकरती· राजाको
अत्यंत प्यारीथीस्त्री सदाधर्मकार्य करनेंवाली· सोवह जनकराजाकी पटराणी विमानमें बैठ ब्रह्मलोकको जातीभई ११ इंद्रसे
आदिले सारेदेवगण अगवानी लेनेको महाराणीके सामने आयेहैं सो हे मुनिराज ब्रह्माजीभी इस महाराणीको नमस्कारकरतेहैं

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९।४५ | १ | भु | १।६।३१ ७ २५।३९।४९ ४७।५०।५४ | २५ | ३ | २५ | ११ | हस्ते·२ र्कः २६।३१।४ उफा·१ त्रः १९।२७ मेषेडुः ५३।४७ |
| २९।४० | २ | श | १५।४७ ३४।५३।५ १३।५९ १९।५५ | १९ | ४ | २६ | १२ | मेष ४।४५३· |
| २९।३५ | ३ | र | २२।४२ मु ५२।४४ हस्ते ३।० २ | १७ | ५ | २७ | १३ | म २२।४३ या· वृषो·४ भौमः २९।४४ उफा·२ कन्येर्कः ३१।५८ विशा·२ |
| २९।३० | ४ | चं | १०।१२ कृ ५०।४४ वृ ३७।१९ | १९ | ६ | २८ | १४ | हस्ते·२ र्कः ४९।३९ वृषेडुः ७।१४ |
| २९।२५ | ५ | म | ६।१३ रो ४७।५६ सि·१।५५ | १५ | ७ | २९ | १५ | उफा·३ त्रः ३५।२९ |
| २९।२० | ६ | बु | ०।१४·म ४३।२६ व्या ३३।५३ | २· | ८ | ३· | १६ | म २७।५६ उपदा २ या· विशा·२ भृगुः ३१।५२ मिथुने १६।३१ |
| २९।२० | ७ | ब्रु | ५६।१२ अवम् — | | | | | |
| २९।१५ | ८ | हृ | ५·।१३ आर्द्रा· [illegible] १।३०२१ | २९ | १ | १७ | | उफा·४ त्रः ५६।४४ कर्के र ३१ महलक्ष्मी |
| २९।१० | ९ | सु | ४४।१७ पु [illegible] | २२ | १० | २ | १९ | हस्ते·३ र्कः ११।१७ श्लेषा·१ भौमः ५।७१९ उफा·४ कन्ये भृगुः ४५।४५ |
| २९।०५ | १० | श | ३९।१४ पु [illegible] | २३ | ११ | ३ | १९ | म ११।१६ उप २८।१४ या· ह·२ त्रः ४२।४·वि·१ [illegible] स्वर्गसिंहेर्कः ५५।२० |
| २९।०० | ११ | र | ३२।१२ श्ले [illegible] | २४ | १२ | ४ | २० | सिंहे इः २८।६ द्वादशी ११ |
| २८।५५ | १२ | चं | २६।५२ म [illegible] | २५ | १३ | ५ | २१ | ह·४ र्कः ३४।३६ ह·२ त्रः ३।३४ चि·४ बुधः श्चिके भृगुः ५४।४२ |
| २८।५० | १३ | म | २१।५ पू [illegible] २।५५ | २६ | १४ | ६ | २२ | मे २२।५ पू उप [illegible] कन्ये इः ३४।५० |
| २८।४५ | १४ | बु | १९।५५ उ [illegible] | २७ | १५ | ७ | २३ | हस्ते·३ त्रः ३४।३९ |
| २८।४० | ३० | हृ | १४।४४ ह [illegible] २।३२ | २८ | १६ | ८ | २४ | चित्रा·१ र्कः ५५।४ श्लेषा·१ भौमः ३७।१२ मैत्रो·१ भृगुः ५२।२२ तुलेडुः ४०।१ |

त्रि·३५।४४ गतिमात्र

कैंडु : २२।२२

२२ पितृमोक्ष ३०

| सू | म | बु | बृ | भृ | श | रा | के | | सू | म | बु | बृ | भृ | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०५ | ०३ | ०५ | ०५ | ०७ | ०२ | ०५ | ११ | | ०५ | ०२ | ०४ | ०४ | ०५ | ०२ |
| २३ | १९ | १८ | ०१ | ०२ | १८ | ०२ | ०२ | | २४ | ०६ | २२ | २४ | ०७ | ०५ |
| २७ | ५८ | ३२ | २१ | १० | ३६ | २१ | ३१ | | २७ | ५६ | ५२ | ५१ | ११ | ५६ |
| ४२ | १८ | ०४ | ४० | ३४ | ४८ | ५७ | ५७ | | ०१ | २५ | ०८ | ५२ | ५२ | ०९ |
| ५९ 
२३ | ३५ 
२२ | १३ 
११ | १३ 
४० | ७० 
१४ | ०१ 
१५ | ०३ 
११ | ०३ 
११ | | ५९ 
०८ | ३१ 
२६ | २४५ 
३२ | ०४ 
५५ | ६६ 
०८ | ०२ 
१० |




| म | बु | बृ | भृ | श |
|---|---|---|---|---|
| ०३ | ०९ | ०० | ०३ | ०३ |
| ०९ | २५ | २७ | १४ | १२ |
| ५० | १२ | १८ | ३१ | ०० |
| ०४ | ०३ | २५ | ५१ | १२ |
| ३२ 
३५ | १९५ 
३१ | ५४ 
३४ | ३७ 
०० | ५६ 
५२ |

वा·८।२५।४५।५८ दि १।४।२८ मि ४४।२०

सं१९४२ १६ भाद्रपदशुदि१३ ह५८।५३ व्र५८।५३ जिल्हिज१२ कन्यादर्शनं·

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७ ३।१।५ | १ | बु | ४५।३३स्व·३।०७स्वा।३३।२५ | २९ | १८ | ९ | २६ | कन्येडः१६।३७ |
| ३।१।०० | २ | बृ | ४२।१८उ·०।०६स्व·७।३० | ३० | १९ | १० | २७ | म·४ज्ञः५६।५२चित्रां·३तुलेभृगुः५·।१७ |
| ३·।५५ | ३ | शु | ४·।०८वि५८।५·स्वा·२।३२ | १ | २० | ११ | २८ | उफा·१अर्कः५८।४९पुष्ये·१भोमः१·।४३तुलेंडः२८।५२ |
| ३·।५० | ४ | श | ३९।१२स्वा५९।५६ऐ५५।११ | २ | २१ | १२ | २९ | म·९।४·उ३९।११या·जन्मगणेश·४ |
| ३·।४५ | ५ | र | ३९।३१वि६।०·वै५३।·२ | ३ | २२ | १३ | ३० | चित्रां·४भृगुः३७।४६वृश्चिकेडः४६।४७ऋष·५ |
| ३·।४· | ६ | चं | ४१।१२वि·२।२३वि५२।५५ | ४ | २३ | १४ | ३१ | पफा·१ज्ञः१९।१८ — नडा·७ |
| ३·।३५ | ७ | मं | ४३।५९अ·६।·४प्री५२।३७ | ५ | २४ | १५ | १ | म४३।५९उ·उफा·२संकन्यायामर्कः [३३।५२।नु।२५] पुन्ना।३१।५२उ·स्व |
| ३·।३· | ८ | बु | ४७।५३ज्ये१·।१५·आ५२।·८ | ६ | २५ | १६ | २ | म१५।५६या·पुष्ये·२भोमः२९।·४स्वा·२भृगुः२३।१५धनेडः२·।१५·रा |
| ३·।२५ | ९ | बृ | ५२।३२मू१६।३१सौ५३।१६ | ७ | २६ | १७ | ३ | पफा·२ज्ञः२४।३० — धिका·८ |
| ३·।२· | १० | शु | ५७।३७पू२२।५०शो५४।४३ | ८ | २७ | १८ | ४ | उफा·३अर्कः१८।२४याम्योदयमगस्त्यः१४।४२:::मकेंडः३[illegible] |
| ३·।१५ | ११ | श | ६·।०० उ२९।११अ५६।१२ | ९ | २८ | १९ | ५ | म३·।११उ·स्वा·२भृगुः९।४४ |
| ३·।१० | १२ | र | ·२।४४श्र३५।३८सु५७।२२ | १० | २९ | २० | ६ | म·२।४४या·पफा·३ज्ञः३१।२५उफा·४राहुः पफा·[illegible]३९।३२प — श्रा ११ |
| ३·।·५ | १२ | चं | ७।२८ध४१।२२शू५८।·२ | ११ | ३० | २१ | ७ | पुष्ये·३भोमः४७।२५स्वा·३भृगुः५६।१२जमेंडः८।३० |
| ३·।०० | १३ | मं | ११।२८श४६।१२गू५७।५५ | १२ | ३१ | २२ | ८ | उफा·४अर्कः२।३२पफा·४ज्ञः५२।२६ |
| २९।५५ | १४ | बु | १४।२३पू५·।०·गं५६।५६ | १३ | १ | २३ | ९ | म१४।२३उ४५।१६या·ह·मा·श्रीजान·२।१७मीनेंडः३३।१९अनंत१४ |
| २९।५० | १५ | बृ | १६।१०उ५२।३३वृ५४।५५ | १४ | २ | २४ | १० | स्वा·४भृगुः४५।·३हवींदयेगुरुः·।१९:::पितृपक्ष १५ |

| सू | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ·५ | ·३ | ·४ | ·४ | ·६ | ·२ | ·५ | ११ |
| ·८ | ११ | २६ | २८ | १६ | १८ | ·३ | ·३ |
| १९ | ३९ | ·· | १२ | ३४ | ·३ | ·६ | ·६ |
| २८ | १४ | ४७ | ११ | ५६ | ५२ | २७ | २७ |
| ५८ | ३६ | ८५ | १३ | ७२ | ·३ | ·३ | ·३ |
| ५३ | ३९ | २५ | ४· | ·२ | १३ | ११ | ११ |

| सू | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|
| ·५ | ·१ | ·२ | ·४ | ·८ | ·२ |
| १· | २९ | २५ | २३ | १४ | ·९ |
| २९ | ३३ | ३५ | ४२ | ४६ | २८ |
| ·७ | २५ | ३५ | ·४ | ·४ | ·४ |
| ५९ | ३१ | २४७ | ·४ | १६ | ·२ |
| १८ | २६ | ३२ | ५९ | ·८ | ·· |




| मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|
| ·३ | ·९ | ·· | ·३ | ·२ |
| ·२ | १० | १४ | ·६ | २८ |
| २७ | ५८ | ३९ | ·१ | ४३ |
| ४४ | ३६ | ३१ | ४२ | ४९ |
| ३१ | ८८ | ५४ | ३६ | ५६ |
| २२ | २२ | ३४ | ·२ | ५२ |

वा·८।२५।५५।४४दि१४।५५मि४४।५५

सं१९४२ १४ भाद्रपदवदि१२ सि५७।६

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६ | ३३।२५ | १ | बु | ४३।१७शा२८।४४सुतु१।४२ | २५ | ४ | २६ | १२ | ऽद्दि·२भौमः२३।५० |
| | ३३।२· | २ | बृ | ४५।००पू३३।१४धृ३८।३५ | २६ | ५ | २७ | १३ | म·३प्र·त्तः··।५१ हस्तो·२मृगुः५८।३८ मीनेर्कः१५।३५ |
| १५ | ३३।०५ | ३ | शु | ४५।१९उ३४।२७शू३६।२३ | २७ | ६ | २८ | १४ | म१५।१८उ४५।१८या· |
| | ३३।·· | ४ | श | ४४।२१रे३५।२४गा३३।१० | २८ | ७ | २९ | १५ | हफां·१ऽर्कः४।२९ मेषेर्कः३५।२४ गणेश·४ |
| | ३२।५५ | ५ | र | ४२।२०अ३५।०८ बृ२८।५९ | २९ | ८ | ३० | १६ | हस्तो·२मृगुः४३।५४ |
| | ३२।५· | ६ | चं | ३८।५७भ३३।४७क्ष२३।५६ | ३· | ९ | ३१ | १७ | म३८।५७उ·ऽद्दि·३भौमः३३।१२ सर्वोदयंत्तः२२।४·बृषेर्कः४८।१९ |
| | ३२।४५ | ७ | मं | ३४।४७कृ३१।३८व्या१८।१७ | ३१ | १० | १ | १८ | म·६।५२या·हफां·२ऽर्कः३३।२५ मिनेवर२३·शीतला·७ |
| | ३२।४· | ८ | बु | २९।४८रो२८।२४हृ११।३७ | ३२ | ११ | २ | १९ | हफां·४गुरुः३।२३·हस्तो·४मृगुः२५।१·मिथुनेर्कः५६।४२जन्मा·८ |
| | ३२।३५ | ९ | बृ | २४।१६मृ२४।५८व·४।३३ | ३३ | १२ | ३ | २· | म५२।१८उ·मघा·३मागीतः४६।२· |
| | ३२।३· | १० | शु | १८।१९आ२·।५८व्या४९।३९ | ३४ | १३ | ४ | २१ | म१८।१९या·हफां·३ऽर्कः५७।२८ऽऽद्री·४शनिः [illegible] ११ |
| | ३२।२५ | ११ | श | १२।११पु१६।४४व४·।४२ | ३५ | १४ | ५ | २२ | ऽद्दि·४कर्के भौमः४·।३४ चित्रां·२मृगुः१४।२६ कर्केर्कः·२·।०८ अजा |
| | ३२।२· | १२ | र | ·६।·५पु१२।३४पू३४।·६ | ३६ | १५ | ६ | २३ | गोवत्सा १२ |
| | ३२।१५ | १३ | चं | ००।१०श्ले·८।३५शि२६।४२ | ३७ | १६ | ७ | २४ | म··।१·उ२७।२५या·सिंहेर्कः८।३५ |
| | ३२।१५ | १४ | चं | ५४।३९ अवमः | | | | | |
| | ३२।१० | ३० | मं | ४९।४·म·५।·२सि१९।४३ | ३८ | १७ | ८ | २५ | हफां·४ऽर्कः२३।२१ चित्रां·२मृगुः३।४८ |

चन्द्र·६

| सू | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ·४ | ·३ | ·४ | ·४ | ·५ | ·२ | ·५ | ११ |
| २२ | ·१ | ·८ | २४ | २७ | १७ | ·३ | ·३ |
| ४१ | ४८ | ४७ | ४५ | ३० | ·· | ५७ | ५७ |
| २९ | ४८ | २६ | ३३ | १२ | ·७ | १९ | १९ |
| ५८ २१ | ३५ ४२ | ३३ १· | १३ ४४ | ७२ ·५ | ·५ ·७ | ·३ २१ | ·३ ११ |

| सू | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|
| ·४ | ·१ | ·· | ·४ | ·७ | ·२ |
| २४ | २१ | २० | २२ | १९ | ·८ |
| ४३ | १० | ·६ | २२ | ·८ | ५५ |
| ·४ | १२ | ५८ | १८ | ०० | ५९ |
| ५९ ·८ | ३१ २६ | २४५ ३३ | ·४ ५९ | ६६ ·८ | ·२ ·· |




| मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|
| ·२ | ·७ | ११ | ·२ | ·२ |
| २३ | २० | २९ | २६ | १३ |
| ५· | ५८ | ५७ | ·८ | ३५ |
| ·८ | ४२ | ३१ | ५६ | ४४ |
| ३१ २२ | १८७ २३ | ५४ २१ | ३७ ·· | ५६ ५२ |

वा·८।२५।५५।२८दि१५।३५मि४५।३५

सं० १९४२ १५ श्रावणशुदि ११ ५५८।५८ जिल्कादि ११ स्तनादर्शनं०

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५ | ३३।१५ | १ | म | २४।२६म४५।२५व०५।४७ | २५ | ८० | ११ | २५ | सं० पू० ४३कः ५५।४८ ... मो० ... ३।२५ ... स्फो० २ व ... स्फो० ४ |
| | ३३।११ | २ | बु | २९।१५ पू४४।५ शि ५२।४४ | १ | २१ | १२ | २० | कन्याद्रुः ५७।२५ <br> श्रवण: २५।०० |
| १७ | ३३।०९ | ३ | बृ | १५।०७ उ४१।०० शि ७।११ | २ | २२ | १३ | २१ | म४३।२९३० |
| | ३३।०४ | ४ | शु | ११।५२ हस्त ०।०६ सा ४।२९ | ३ | २३ | १४ | २२ | म११।५५ या० उफा० १ स्कृ: ८।५२ <br> पुष्पे १३।५६ या० नाग० ५ |
| | ३३।०० | ५ | श | ९।०१।११ चि ४०।२ शु २।४० | ४ | २४ | १५ | १ | मघा० २ सं० सिंहेर्कः [१३] [५६] [त्रि] [१०] पश्चिमालासः ११।५२ तलेद्रुः ०।१४ |
| | ३२।५६ | ६ | र | ०९।४२ स्वा ३२।४९ शु ५।५२ | ५ | २५ | १६ | २ | ३३ छ्री० ४ भौम: पा३९ स्फो० स्पु० त्त: ४२।११ उफो० ० कन्ये मृगु: ५२।२८ |
| | ३२।५२ | ७ | चं | ०।१० वि ४४।३६ ब्र ३४।०० | ६ | २६ | १७ | ३ | म० ५१० ३३।२९।५५ या० हस्ते केतु: २८।५५ |
| | ३२।४८ | ८ | मं | ०।४४ अनु ५१।३१ ऐ ३।१० | ७ | २७ | १८ | ४ | मघा० २ कः ४३। ० स्फो० ३ गुरु: २८।५३ |
| | ३२।४४ | ९ | बु | १२।२५ ज्ये ५३।४४ वै ३।१२ | ८ | २८ | १९ | ५ | उफो० ३ बुधः ३६।०४ धने ८: ५३।३४ |
| | ३२।४० | १० | बृ | ७।१७ मू ५५।५५ वि ३।५५ | ९ | २९ | २० | ६ | म४३।४३३० |
| | ३२।३६ | ११ | शु | २१।०६ पू ६०।०० प्री ५।२६ | १० | ३० | २१ | ७ | म४४।५६ या० चंदि० १ भौमः ९।०४ पवित्रा ११ |
| | ३२।३२ | १२ | श | ६६।५८ पू ०।५।४२ आ ३६।५२ | ११ | ३१ | २२ | ८ | म० ३ कः २० ८ म० ४५ त्त: ५२।०१ उफा० ४ स्कृ: २९।४० ... २२ |
| | ३२।२८ | १३ | र | ३३।०२ उ ४२।२० सौ ३०।२९ | १२ | १ | २३ | ९ | न मा० संवत्सर १४।५८ |
| | ३२।२४ | १४ | चं | ३३।४४ श्र ०८।२५ शो ३१।२६ | १३ | २ | २४ | १० | म४३।४३३० पश्चिमालोदयः २९।२६ ... कुंभे ८: ५१।२१ |
| | ३२।२० | १५ | मं | ४।२२ ध ४२।०८ अ ३५।५९ | १४ | ३ | २५ | ११ | म० ८।३७ या० म० ४ सिंकः ३०।२६ हस्ते० १ भृगु: २६।२२ ऋषितर्पणी १५ |

| सू | म | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०४ | ०२ | ०४ | ०४ | ०५ | ०२ | ०५ | ११ |
| ०१५ | २२ | १० | २१ | १० | २५ | ०४ | ०४ |
| ०१९ | ५५ | ५९ | ४० | ३९ | ४७ | ४१ | ४१ |
| २७ | ३४ | ५२ | ०६ | ४४ | ३५ | ४९ | ४९ |
| ५७ | ३८ | ४८ | १३ | ७२ | ०५ | ०३ | ०३ |
| ५० | ५५ | ०२ | ४४ | ४२ | ०९ | ११ | ११ |

| सू | म | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|
| ०४ | ०१ | १० | ०४ | ०६ | ०२ |
| १० | ११ | २२ | २१ | २६ | ०८ |
| ५५ | ५० | ४९ | १२ | ४२ | २७ |
| १० | ०२ | ३५ | ३० | १२ | ४३ |
| ५९ | ३१ | २४५ | ०४ | ५६ | ०२ |
| ०८ | २६ | ३२ | ५७ | ०८ | ०० |




| म | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|
| ०४ | ०६ | ११ | ०२ | ०२ |
| १६ | १७ | २७ | २७ | ०० |
| ३६ | २५ | ०५ | ३५ | २२ |
| ५४ | १५ | ४९ | २७ | ४९ |
| ३० | १९७ | ५४ | ३७ | ५६ |
| १४ | २३ | २५ | ५४ | ५० |

...।५५।५५।४।२।६।१।मिथुहार०

८० स्तायोरध्यायौदीन् प्रब्रूयात् बह्वृचां ऋक्शिरोविज्ञानि पर्वाणि छन्दोगानां सूक्तान्यथर्वणानां प
र्वसर्वं पठित्वा शुक्लं शीघ्रमस्यजपन्ति ॐ सहनोस्तु सहनोवतु सहनः इदं वीर्यवदस्तु ब्रह्म इ
न्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे इतिमन्त्रं जपित्वा त्रिरात्रमध्ययनं लोमनखानामनिकृ
न्तनवपनं च करिष्यामहे इ सर्वेषां सङ्कल्पः प्रागुत्सर्गाद्दानियमो लोमनखनिकृन्तन
उत्सर्गावधि लोमनखानामकृन्तनमहं करिष्ये इति छन्दसामुत्सर्गात्मान न्यत्र ब्राह्मणा
योरध्ययनम्

इति श्रीमहाराजाधिराजश्रीरणवीरसिंहभूपा
लाज्ञया जनार्दनभट्टेन पारस्करसूत्रानुसारतः
संग्रहीतोऽध्यायोत्सर्गोपाकर्मप्रयोगः समा
प्तिमगमत्